6478

# गीता-पद्यानुवाद

★

पद्यानुवादकर्ता :

श्री रामस्वरूप खरे

बी० ए० 'साहित्यरत्न'

☆

प्रकाशक :

अखण्ड ज्योति संस्थान,

मथुरा ।

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# ★ श्रीमद्भगवद्गीता ★

## ( मूल और पद्यानुवाद )

पुस्तकालय
युग निर्माण योजना
मथुरा
परिग्रहण सं० 478
वर्गांक

पद्यानुवादकर्ता—

श्री रामस्वरूप खरे बी० ए०, साहित्यरत्न

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक—

अखण्ड-ज्योति संस्थान

मथुरा ।

★

प्रथमवार ] १९६५ [ मूल्य—तीन रुपया

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| भूमिका | | ३ |
| १. प्रथम अध्याय | | ६ |
| २. द्वितीय अध्याय | | १७ |
| ३. तृतीय अध्याय | | २६ |
| ४. चतुर्थ अध्याय | | ३७ |
| ५. पंचम अध्याय | | ४३ |
| ६. षष्ठम अध्याय | | ४८ |
| ७. सप्तम अध्याय | | ५६ |
| ८. अष्टम अध्याय | | ६१ |
| ९. नवम अध्याय | | ६६ |
| १०. दशम अध्याय | | ७२ |
| ११. एकादश अध्याय | | ७६ |
| १२. द्वादश अध्याय | | ९२ |
| १३. त्रयोदश अध्याय | | ९५ |
| १४. चतुर्दश अध्याय | | १०१ |
| १५. पंचदश अध्याय | | १०६ |
| १६. षोडश अध्याय | | ११० |
| १७. सप्तदश अध्याय | | ११४ |
| १८. अष्टदश अध्याय | | ११६ |


www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# * गीता धर्मानुष्ठानों की पृष्ठभूमि *

राष्ट्र के भावनात्मक नव जागरण के लिए गीता ज्ञान से बढ़कर और कोई माध्यम हो नहीं सकता। सच्ची प्रगति वही है जो भावना स्तर पर हो। भौतिक प्रगति अस्थिर है। कोई भी बाह्य प्रतिकूलता या दुर्घटना उसे नष्ट कर सकती है पर यदि आन्तरिक-भावनात्मक समृद्धि बची रही तो कुछ ही दिन में जो खोया था उसे पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त कर लिया जायगा। इसके विपरीत यदि मनोबल ऊँचा न रहा, विचारधारा निकृष्ट कोटि की रही तो सम्पन्नता रहते हुए भी मनुष्य दुखी रहेगा और एक दूसरे से टकरा कर अपने विनाश का पथ प्रशस्त करेगा। सच्ची प्रगति भावनात्मक उत्कर्ष को ही माना गया है। उसी के आधार पर मानव जीवन की समग्र प्रगति संभव होती है। अतएव हमें मूल को सींचना चाहिए ताकि राष्ट्रीय विकाश का वृक्ष पत्र पल्लव और फल-फूलों से लदा हुआ दृष्टिगोचर हो सके।

संसार में धर्म और राजनीति यह दो ही शक्तियाँ प्रधान हैं। राजनीति का भौतिक जीवन पर नियंत्रण रहता है तो धर्म नीति का आन्तरिक क्षेत्र पर। इसलिए जहाँ मनुष्य के भावनात्मक उत्कर्ष का प्रश्न आता है वहाँ राजनीति नहीं धर्म नीति की ही प्राथमिकता रहती है। हमें अपना भौतिक ही नहीं भावनात्मक उत्थान भी करना है। इसलिए भौतिक सुख साधनों की वृद्धि के प्रयत्नों तक ही सीमित न रहकर वे प्रयास भी करने ही चाहिए जिनसे हमारे आन्तरिक स्तर को ऊँचा उठाने में सहायता मिले। इस दृष्टि से गीता की उपयोगिता अनुपम है।

भावनात्मक उत्कर्ष के लिए गीता की विचारधारा को एक व्यापक आन्दोलन का रूप दिया जाना, युग निर्माण की दृष्टि से आवश्यक था। अतएव यह योजना बनाई गई है कि गीता को एकाकी पठन-पाठन, चिन्तन मनन तक ही सीमित न रहने देकर उसकी महान् विचारधारा का जन-जागरण के लिए भी उपयोग किया जाय और उस उपयोग को एक योजनाबद्ध प्रकृया के रूप में आगे बढ़ाया जाय।

प्राचीन काल की कथा शैली जन-जागरण के लिए बहुत ही उपयुक्त पद्धति है। श्रद्धा और धार्मिक वातावरण में ही अन्तरात्मा के प्रभावित करने वाले तत्वों को सुना और समझा जा सकता है। साधारण सभाओं, भाषणों में वक्ता का जितना प्रभाव पड़ता है उससे कहीं अधिक धार्मिक कर्मकाण्ड के रूप में कहे सुने गये प्रवचनों का पड़ता है। मनुष्य के द्वारा कही गई बात की अपेक्षा ईश्वर, शास्त्र एवं ऋषियों के संदेश को सुनते हुए लोग अधिक प्रेरणा ग्रहण करते हैं। प्राचीन काल में साधु ब्राह्मणों के पास जन-जागरण का यही प्रधान माध्यम था।

## लोक शिक्षण की सरल प्रक्रिया —

एक-एक व्यक्ति से अलग-अलग बात करने की अपेक्षा अधिक लोगों को इकट्ठा करके उन्हें सामूहिकता के उत्साहवर्धक वातावरण में कुछ कहना सुनना अधिक उपयुक्त रहता है। इसलिए अधिक लोगों को एकत्रित करके प्रवचन करने की पद्धति के रूप में धर्मानुष्ठानों के आयोजनों का प्रचलन किया गया। पारिवारिक धर्म शिक्षण के लिए दस संस्कारों के धर्मानुष्ठान पूर्वक सामूहिक आयोजन चलाये गये,

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



जिससे उस घर के तथा पड़ौस के लोग एकत्रित होकर जीवनोत्कर्ष के विभिन्न पहलुओं पर अनुभवी पुरोहितों द्वारा दी हुई शास्त्रों की धार्मिक शिक्षा को ग्रहण कर सकें। इसी प्रकार पर्व और त्यौहारों को सामूहिक रूप से मनाने की प्रथा चली ताकि समाजगत समस्याओं का स्वरूप समझने और उन्हें हल करने के लिए आवश्यक शिक्षा को उन अवसरों पर सुना समझा जा सके। व्यक्तिगत जीवन का निर्माण षोडश संस्कारों के माध्यम से और समाज का निर्माण पर्व त्यौहारों के माध्यम से किया जाता था। यह पद्धतियाँ जब तक उपयुक्त रीति से चलती रहीं तब तक इनका समुचित लाभ भी भारतीय समाज को मिलता रहा। आज भले ही वे महान् परम्पराऐं चिन्ह-पूजा मात्र रह गई है पर जब कभी भी उनका पूर्व काल की तरह सही स्वरूप प्रयुक्त होने लगेगा तभी लोक कल्याण की, भावनात्मक उत्कर्ष की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता पूरी होने लगेगी।

समय-समय पर विशेष प्रकार की भावनाओं के उत्कर्ष के लिए विभिन्न धर्म शास्त्रों के प्रवचन कथा पुराणों के रूप में जनता के सामने रखे जाते रहे हैं। अनेक देवताओं या अवतारों के नाम पर बने हुए पुराणों में विभिन्न प्रकार की भावनाओं को उभारने और जनता की मनोदिशा को मोड़ने की साधन सामिग्री मौजूद है। तत्वदर्शी प्रवचनकर्ता उनका आश्रय लेकर जनता की भावनाओं को, सामयिक परिस्थितियों को सुलझाने की आवश्यकता पूरी किया करते थे। बड़े-बड़े पुराणों के कितने ही दिनों तक चलने वाले कथा प्रयोजनों का यही प्रयोजन था।

**जन-मानस का परिष्कार—**

सत्यनारायण व्रत कथा, अनन्त चतुर्दशी, ऋषि पंचमी, एकादशी महात्म्य, माघ महात्म्य आदि कथाऐं एक दिन की ही होती हैं। उनमें दैनिक जीवन के स्थायी धर्माचरण की शिक्षा रहती है पर कई दिनों तक चलने वाले पौराणिक कथा प्रवचन जनता की मनोदिशा को क्रमबद्ध रूप से एक विशेष प्रयोजन के लिए ढालते हैं और उनमें जो विकृतियाँ उत्पन्न हो रही होती हैं उनके समाधान का वातावरण उत्पन्न करते हैं। इस दृष्टि से इन देर तक चलने वाले कथा प्रवचनों का अपना विशिष्ट महत्व है। विचारोत्तेजक भाषणों को कहने समझने के लिए परिष्कृत मस्तिष्क चाहिए। अन्यथा उन गंभीर बातों का समझना और समझाना दोनों ही कठिन हो जाते हैं। कथा कहानियों द्वारा यह प्रयोजन बड़ी सरलता से सिद्ध हो सकता है। पढ़े, बिना पढ़े, बालक बूढ़े सभी कहानियाँ पसन्द करते और समझते हैं, उनमें मनोरंजन एवं आकर्षण भी रहता है। न कहने में थकान आती है और न सुनने में। इसलिए प्राचीन काल के इतिहास, उपाख्यान, संस्मरण एवं दृष्टान्तों के माध्यम से जो भी विषय प्रतिपादित किया गया था वह भली प्रकार समझ में आ जाता है। गंभीर विषयों को सरल रीति से जन-मानस में स्थान दिलाने की दृष्टि से कथा पुराणों का विशिष्ट महत्व है। यही कारण है कि वेद चार के चार ही बने रहे पर पुराण एक के बाद एक बनते और बढ़ते चले गये। १८ पुराण और १८ उपपुराणों को मिला कर इतना बड़ा साहित्य है कि संस्कृत का अन्य सारा साहित्य मिलाकर भी उतना न होगा। यह पुराणों की लोकप्रियता का ही प्रमाण है।

पिछले दिनों भागवत पुराण का प्रचलन अधिक रहा है। क्योंकि उसमें भगवान श्रीकृष्ण के बहुमुखी सुसंस्कृत व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए मनुष्य को वैयक्तिक एवं सामाजिक दृष्टि से अधिक समर्थ बनने की प्रेरणा दी गई है। भगवान् श्रीकृष्ण का उज्ज्वल एवं सर्वाङ्ग सुन्दर जीवन इतना उत्तम है कि उसे ठीक प्रकार सुना या समझा जा सके तो उसमें हमारे लिए अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद बहुत

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



कुछ है । दुर्भाग्य से बीच में अज्ञानान्धकार युग में पनपे बड़े आदमियों ने अपने दुराचारों पर पर्दा डालने के लिए वैसे ही कुत्सित कर्म करने वाले देवता एवं अवतारों के चरित्र भी गढ़ दिये और उन्हें पुराणों में जोड़ दिया । जिस सामाजिक मर्यादाओं को निवाहने, चरित्र को उज्ज्वल रखने एवं कर्तव्य परायण रहने के उद्देश्य से कथा प्रवचनों की परम्परा चली थी उसे ही डुबो दिया गया । देवता और अवतारों के ऊपर ऐसे कुकर्म जोड़ दिये गये जो साधारण स्तर का भला मनुष्य कहलाने वाला भी करते हुए सकुचावेगा । अनैतिक बातों का पुराणों के नाम पर समर्थन कराके सामंतों ने अपने दुराचार का मार्ग प्रशस्त किया और अपने विरोध को घटाया । बहुपत्नी प्रथा का कलंक भारत में केवल अज्ञानान्धकार के युग में ही रहा है । उसके समर्थन में कथा वालों ने गढ़कर अपने यहाँ ढेरों रखैलें, दासियाँ, रानियां रखने का ही द्वार खोला गया । ऐसी ही और भी बहुत सी गड़बड़ियाँ की गई जिनसे पुराण अपनी उपयोगिता खो बैठे और उनमें जहाँ बहुत कुछ उपयुक्त है वह भी दूध में विष मिल जाने की तरह अनुपयुक्त हो गया । यही कारण है कि कथा पुराण सुनकर सुनने वालों के भीतर जिस आत्मिक प्रखरता का उदय होना चाहिए वह कहीं भी नहीं होता ।

## प्रखर एवं सारगर्भित प्रवचन—

आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रखरता एवं पवित्रता से परिपूर्ण कथा प्रवचनों का प्रचलन हो ताकि हम अपनी वर्तमान कालीन बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकृतियों से छुटकारा पाकर ऋषि संतान कहलाने योग्य तेजस्वी व्यक्तित्व धारण कर सकें और अपना तथा अपनी मातृभूमि का एवं संस्कृति का गौरव बढ़ा सकें । इस प्रयोजन के लिए गीता सर्वोत्तम ग्रन्थ है पर उसमें कठिनाई यह है कि कथा पुराण का प्रयोजन पूरा नहीं होता । विचारणा और विवेचना तो पर्याप्त है पर जन-साधारण को, बाल-वृद्ध को समझ सकने लायक वह आकर्षण नहीं जो कथाओं में होता है । अब यह प्रयत्न किया गया है कि गीता के प्रमुख स्थलों के साथ धार्मिक उपाख्यान जोड़ कर उसे कथा की आवश्यकता पूर्ण करने वाली भी बना दिया जाय । 'गीता कथा' इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए लिखी जा चुकी है । उसका प्रवचन धर्म पुराणों की कथा कहने सुनने का उद्देश्य बहुत हद तक पूरा करेगा ऐसी आशा है ।

प्रथम संस्करण अभी अपूर्ण है । उसमें अभी अनेक कथाओं, दृष्टान्तों, सस्करणों, उद्धरणों एवं सूक्तियों का समावेश किया जाना शेष है । जितना याद था प्रथम सस्करण में छपा है । द्वितीय सस्करण बहुत ही परिष्कृत एवं परिवर्द्धित होगा, उसमें गीता की कथा पुराण के रूप से प्रयुक्त करने के लिए पर्याप्त सामग्री रहेगी । अभी तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ समय तक गीता कथा के प्रथम संस्करण से ही काम चलाना पड़ेगा ।

भागवत सप्ताह का जो क्रम प्रचलित है, उसी का अनुसरण करते हुए गीता सप्ताह कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए । एक सुसज्जित व्यास गद्दी पर बैठकर पंडित लोग कथा कहते हैं । व्यास गद्दी को एक मंडप रूप में बनाया जाता है । उसके चारों ओर जौ उगाकर हरियाली बनाने का रिवाज है । यह हरियाली अन्य फूलदार पौदों या गमलों से भी की जा सकती है । छोटी चौकियों पर दो कलश दोनों ओर रखे जा सकते हैं जिन पर अगरबत्ती एवं दीपक जलते रहें । कथा सुनने वालों के लिए सुविधाजनक स्थान हो, महिलाओं को एक ओर पुरुषों को दूसरी ओर बैठने

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



का प्रबंध रहे । प्रवचन स्थल पर महापुरुषों के, देवताओं के चित्र तथा आदर्श वाक्य टँगे रहें। उस स्थान का लिपा पुता स्वच्छ सात्विक होना आवश्यक है । मैले कुचैले, धुंए धूलि या अन्धेरे सील बदबू तथा घुटन भरे वे स्थान जहाँ सर्दी गर्मी अधिक हो, कथा के लिए उपयुक्त नहीं। अच्छा स्थान भी अच्छे वातावरण की तरह ही आवश्यक है।

## अधिक लोगों की अधिक सुविधा —

कथा का समय ऐसा रखा जाय जिसमें अधिक लोगों को अधिक सुविधा रह सके। महिलाऐं भोजन बनाने के लिए ९ बजे के करीब लग जाती हैं । पुरुष भी अपनी दुकान तथा नौकरी पर जाने के लिए उससे पहले ही चले जाते हैं। इसलिए प्रातःकाल सूर्योदय के आस-पास कार्य आरंभ कर देना चाहिए और उसे ९ बजे तक समाप्त कर देना चाहिए। इसी प्रकार शाम को महिलाऐं और पुरुष छैः बजे बाद अपने कामों से निश्चिन्त होते हैं । तब रात को नौ-दस बजे तक बैठ सकना सुगम होता है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार यह देखा जाना चाहिए कि अधिक संख्या में लोग किस समय उपस्थित हो सकते हैं। उसी दृष्टि से कथा का समय रखना चाहिए। दो बार में कथा का क्रम रखे जाने से कहने वाले और सुनने वाले सभी को सुविधा रहती है।

प्रतिदिन गीता का पारायण भी होना चाहिए । चूंकि हर किसी के लिए संस्कृत श्लोकों का पढ़ना और ठीक तरह पाठ करना संभव नहीं होता इसलिए इस पुस्तक में श्लोकों का पद्यानुवाद राधेश्याम तर्ज में करा दिया गया है । पारायण इसी आधार पर सरल रह सकता है। प्रतिदिन एक घंटा प्रातः और एक घंटा सायं पारायण का कार्यक्रम रखा जाय और शेष डेढ़-डेढ़ दो-दो घंटे प्रवचन हुआ करे।

पारायण गायन के साथ होना चाहिए । यदि हारमोनियम तबला, ढोलक, मजीरा, करताल, आदि के साथ हो सके तो और भी अच्छा है। पारायण के लिए दो पार्टी बनानी चाहिए। एक श्लोक का पद्यानुवाद एक पार्टी गाये तो दूसरे का दूसरी पार्टी। इस प्रकार क्रम जारी रखने से थक न भी नहीं आती और सुन्दर भी लगता है । सब लोग मधुर स्वर से एक साथ गायें तो उसमें कीर्तन का आनन्द आता है और उन सभी गायकों को पारायण करने का पुण्य भी मिलता है । इस तरीके से उस आयोजन में सम्मिलित रहने वालों को सम्पूर्ण गीता का भाव पद्यानुवाद में सुनने का भी अवसर मिल जाता है। प्रवचन तो कुछ थोड़े से श्लोकों की व्याख्या का ही हो सकता है । सात दिनों में ७०० श्लोकों की विस्तृत व्याख्या का प्रवचन संभव नहीं । प्रस्तुत योजना के अनुसार ५२ श्लोकों का व्याख्यान रखा गया है । शेष श्लोकों का भाव तो इस पारायण कार्यक्रम में ही मिलता है, इसलिए उसकी भी अपनी उपयोगिता है । मधुर कठ वाले लोगों को इन गायन पार्टियों का नेतृत्व करना चाहिए । शेष लोगों को ऐसा अभ्यास करा देना चाहिए कि वे मध्यम स्वर में परस्पर आवाज और स्वर मिलाकर बोलें। आगे पीछे और ऊँचे नीचे स्वर में अनिच्छा और कर्कशतापूर्वक गाने से न गाना अच्छा है क्योंकि उससे लयबद्धता का आनन्द ही चला जाता है और पारायण नीरस, कर्कश एवं बेतुका लगने लगता है । इसलिए पारायण से पूर्व उसमें सम्मिलित होने वालों को मिलकर मधुर स्वर से गाने का पूर्वाभ्यास ( रिहर्सल ) करा लेना चाहिए। सब पारायण करने वालों के सामने गीता की पुस्तकें लकड़ी की तिपाइयों पर रखी हुई हों, तो देखने में उनकी पंक्ति

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



बद्ध एकसरता बहुत ही उत्तम दृष्टिगोचर होती है। कथा वाचक की पुस्तक भी तिपाई पर ही खुली रखी रहती है और जहाँ संभव होता है उसे पुष्प आदि से सजा भी दिया जाता है।

कथाकार मध्यम एवं बंधे हुए स्वर में, हृदय तक पहुँचने वाली शैली के साथ कथा कहें। हँसी मजाक, ओछे दृष्टान्त, अश्लील चर्चाऐं कथा में सर्वथा निषिद्ध मानी जानी चाहिए। ऐसी पद्धति ओछे आदमी ही पसन्द करते हैं। धार्मिक वातावरण का स्तर अक्षुण्ण बना रहे इसलिए आवेश ग्रस्त होकर या उदासीन भाव से चिन्ह-पूजा की तरह कुछ कहते हुए समय काट देने का तरीका ठीक नहीं। इस नीरसता में सब कुछ भार रूप प्रतीत होता है। धर्म चर्चा सरस और हृदयग्राही होनी चाहिए। वक्ता का कर्तव्य है कि अपनी कथन शैली को दिन-दिन परिष्कृत करता चले और सुनने वालों से प्रवचन में रहने वाले दोषों की जानकारी प्राप्त कर उसे सुधारने का प्रयत्न करता रहे। प्रवचन में रहने वाले तथ्यों का जितना महत्व है उतना ही कथा की हृदयस्पर्शी शैली का भी है। उसका निखार होना ही चाहिए।

## मनोरम एवं आकर्षक कार्यक्रम—

कथा के बाद कीर्तन और भजनों का कार्यक्रम रखा जा सकता है। अन्त में आरती भी होनी चाहिए। गायत्री माता का बड़ा चित्र एक प्रथम पूजा वेदी पर स्थापित कर लेना चाहिए। यही गीता माता का भी प्रतीक माना जा सकता है। ज्ञान की देवी गायत्री और गीता तत्वतः एक ही शक्ति हैं। गायत्री का चित्र न मिलने पर सरस्वती का चित्र रखा जा सकता है और उसे पूजन बन्दन का माध्यम बनाया जा सकता है।

प्रथम दिन उन सब लोगों का वरण होना चाहिए जो इस धर्मानुष्ठान में सम्मिलित रहना चाहें। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास पृथ्वी पूजन के बाद कलश पूजन, देव पूजन, स्वस्ति वाचन का कार्यक्रम रहे। प्रथम दिन सबसे संकल्प कराये जाँय कि वे आयोजन में अन्त तक सम्मिलित रहेंगे। उनके हाथ में वरण बांधे जाँय और तिलक किये जाँय। प्रथम दिन प्रातःकाल थोड़ा गायत्री यज्ञ कराया जाय। इसके लिए कथा के समीप ही यज्ञ वेदी बनाई जायँ। उसमें प्रथम दिन और अन्तिम दिन तो हवन किया ही जाय। बन पड़े तो बीच के पाँच दिनों में भी थोड़ा-थोड़ा हवन प्रातः सायं होते रहना चाहिए। दोनों समय की आरती तो आवश्यक है ही।

अन्तिम दिन इस धर्मानुष्ठान की पूर्णाहुति होनी चाहिए प्रवचन प्रातःकाल की बैठक में ही समाप्त कर लिया जाय। इसके उपरान्त गायत्री यज्ञ हो जिसमें उपस्थिति के आधार पर पाँच या नौ कुण्डों की संख्या भी रखी जा सकती है और इसी आधार पर उसका यज्ञ मंडप भी बनाया जा सकता है। इस हवन में सम्मिलित होने के लिए पहले से ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों को आमन्त्रित कर रखना चाहिए। कंधे पर पीला दुपट्टा धारण करके और महिलाऐं पीली धोतियाँ पहन कर आवें तो दृश्य और भी मनोरम हो जाता है। ज्ञान का—धर्म का पीत वर्ण है। यज्ञ में पीत वस्त्र धारण करके सम्मिलित होने पर उसका वातावरण और भी अधिक पवित्र बन जाता है। यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त गायत्री माता के चित्र और गीता ग्रन्थ की सुसज्जित सवारी के साथ जुलूस भी निकाला जा सकता है। धर्मानुष्ठान आरंभ होने के दिन या उससे पहले एक दिन यदि सम्भव हो तो महिलाओं द्वारा जल कलश भर कर लाने को जल यात्रा निकालनी चाहिए। इस प्रकार के धार्मिक जुलूस यदि नारे, पोस्टर

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



बैण्ड आदि के साथ सुव्यवस्थित रीति से निकाले जांय तो उनका दर्शकों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है ।

यज्ञ के समय लोग अपनी बुराइयों को छोड़ने और अच्छाइयों को बढ़ाने का व्रत लेते हैं। यह बहुत ही उपयोगी प्रक्रिया है । उसके लिए उपस्थित लोगों को अधिकाधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । यज्ञ के बाद कन्या भोजन के लिए जितनी कुछ व्यवस्था हो सके करनी चाहिए । नारी जाति के प्रति पूज्य भाव एवं श्रेष्ठता की भावना जागृत करने के लिए कन्या भोजन महत्वपूर्ण है । सच्चे ब्राह्मणों का इन दिनों अभाव ही हो चला है, कन्याओं की पवित्रता अक्षुण्ण है । उन्हें भोजन कराना ब्रह्मभोज की आवश्यकता को भली प्रकार पूरी कर देता है ।

इसी अन्तिम भोज के समय जिन्हें षोडश संस्कारों में से कोई कराना हो तो वह सामूहिक रूप से करा लेना चाहिए। जिन के यज्ञोपवीत नहीं हुए हैं वे इस अवसर पर करा सकते हैं । गर्भिणियों के पुंसवन संस्कार, बच्चों के नामकरण, मुण्डन, विद्यारंभ, अन्न प्राशन के लिए यही समय उत्तम है। जिन्हें वानप्रस्थ लेना हो उनके लिए इससे अच्छा और कोई समय नहीं हो सकता ।

## आर्थिक व्यवस्था और उसकी पवित्रता—

कथा वाचक या किसी को भी पैसा जनता से सीधा नहीं मिलना चाहिए । इससे लेने वाले में दीनता तथा लोभ की वृत्ति बढ़ती है और देने वाले को अहंकारी बनने की सम्भावना रहती है । इसलिए आरती से लेकर दक्षिणा तक का जो भी पैसा आवे उसे धर्मानुष्ठान की प्रबन्ध समिति अपने हाथ में रखे और कथा वाचक आदि को जो देना हो वह स्वयं दे । लेन-देन का सीधा सम्बन्ध प्रबन्ध समिति से रहना चाहिए जनता से नहीं ।

गीता कथा का धर्मानुष्ठान सामूहिक रूप से होता है । इसलिए उसके लिए चंदा ही करना पड़ता है । इसका पूरा पक्का, सही और प्रमाणयुक्त हिसाब रखना चाहिए और जिनने भी वह पैसा दिया हो उन्हें उसे इस प्रकार समझा देना चाहिए कि किसी को सन्देह करने या उङ्गली उठाने की तनिक भी गुंजायश न रहे । जहाँ इस सम्बन्ध में ढील बरती जायगी वहाँ प्रबन्धकों के प्रति अविश्वास फैलेगा और वे सत्कर्म करते हुए भी लोगों की दृष्टि में अपना सम्मान खो बैठेंगे, अतएव इस सम्बन्ध पूरी-पूरी सावधानी बरतनी चाहिए ।

गीता कथाओं का प्रसार अधिकाधिक होना चाहिए । इसके लिए संगठित रूप से ऐसी पृष्ठभूमि तैयार करनी चाहिए कि हर साल, हर जगह इस प्रकार के धर्मानुष्ठान होते रहें । युग-निर्माण योजना को व्यापक बनाने के लिए इस प्रकार के धर्मानुष्ठान बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं ।

—श्रीराम शर्मा आचार्य,

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# ❋ अथ श्रीमद्भगवद्गीता ❋

## प्रथम अध्याय

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥

रण की इच्छा से एकत्रित, इस धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र बीच ।
क्या किया पांडवों ने एवं मेरे पुत्रों ने, आँख-मीच ॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

संजय बोले धृतराष्ट्र सुनो, लखकर के पाण्डव-सैन्य महा ।
गुरु के समीप जाकर सादर, दुर्योधन ने यों वचन कहा ॥

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥

यह व्यूहाकार पाण्डवों की, महती सेना गुरुवर देखो ।
तव-शिष्य द्रुपद-सुत के द्वारा है आरक्षित, इसको देखो ॥

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥

इस धनुष-युद्ध में भीमार्जुन-सम हैं बहु योधा शूर-वीर ।
सात्यकि-विराट से महारथी ज्यों द्रुपद कुशल अत्यन्त धीर ॥

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥

नर-पुङ्गव शैब्य तथा पुरुजित, हैं धृष्टकेतु भी चेकितान ।
काशी-नरेश भी खड़े यहाँ, जो अति पराक्रमी वीर्यवान ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥

विक्रान्त उत्तमौजा एवं अर्जुन-सुत वह अभिमन्यु वीर ।
हैं धर्मराज भीमार्जुन भी, प्रिय नकुल और सहदेव धीर ॥

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥

जो जो प्रधान हैं शूरवीर, इस मेरी सेना में गुरुवर !
शुभ नाम सहित मैं देता हूँ—परिचय उनका, सुनिये द्विजवर ॥

भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥ ८ ॥

हैं आप, पितामह भीष्म तथा संग्राम-जयी कृप और कर्ण ।
वैसे ही भूरिश्रवा वीर अश्वत्थामा एवं विकर्ण ॥

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥

हैं और बहुत से शूरवीर, जो युद्ध-निपुण बलवान बड़े ।
जो निज जीवन की आशा तज, मेरे हित ही युद्धार्थ खड़े ॥

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥ १० ॥

संरक्षित भीष्म पिता द्वारा, यह मेरी सेना है अजेय ।
पर, भीमसेन द्वारा रक्षित, उनकी सेना है पराजेय ॥

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥ ११ ॥

हो निज निज मोर्चों पर सुस्थित, अपने मन में शुभ भाव भरें ।
फिर निस्सन्देह सब के ही सब मिल—भीष्म सुरक्षा आज करें ॥

तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखंदध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


कर दुर्योधन को आह्लादित, तब भीष्म-पिता ने हँस कर के।
की घोर शंख ध्वनि हो प्रमुदित, फिर सिंह सदृश गर्जना करके॥

ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥ १३॥

जब शंख नगारे ढोल बजे तो हुआ एक ही साथ शोर।
सारा नभ गूंज उठा उस क्षण, सुनकर के यह जय घटा घोर॥

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः॥ १४॥

तदनन्तर श्वेत हयों से युत, उस उत्तम रथ में हो सुस्थित।
की दिव्य शंख ध्वनि माधव ने, अर्जुन ने भी होकर प्रमुदित॥

पांचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः॥ १५॥

भगवान कृष्ण ने 'पांचजन्य'—अर्जुन ने 'देवदत्त' भारी।
वर 'पौण्ड्र' भीम ने बजा शंख, कर दी मानो रण तैयारी॥

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ॥ १६॥

ले लिया 'अनन्त विजय' नृप ने, जो धर्मराज कहलाये थे।
सहदेव नकुल ने 'मणि पुष्पक' वे शंख 'सुघोष' बजाये थे॥

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः॥ १७॥

सात्यकि अजेय राजा विराट, काशी नरेश धनुधारी ने।
फिर वीर शिखंडी महारथी, तब धृष्टद्युम्न बलधारी ने॥

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक्॥ १८॥

पाण्डवों द्रुपद ने मिलकर के -अभिमन्यु वीर ने जय कारन।
फिर शंख बजाये पृथक् पृथक् अपने उन सबने हे राजन्!॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥

इन सब का सुनकर तुमुल घोष धरती नभ भी हो गये सभय ।
थर-थर सब काँप उठे कौरव, जिनके थे निश्चय वज्र हृदय ॥

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥

कपिध्वज अर्जुन ने खड़े हुये–धृतराष्ट्र सुतों को देख अहा ।
ले धनुष बाण अपने कर में तत्क्षण माधव से विहँस कहा ॥

अर्जुन उवाच

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ २१ ॥

हे योगेश्वर ! हे कृष्ण ! तनिक मेरी विनती निज उर धरिये ।
दोनों सेनाओं मध्य शीघ्र, मेरा रथ, सुस्थापित करिये ॥

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥

जिससे मैं देख सकूँ उनको, जो रण कामना लिये सुस्थित ।
किन किन के साथ युद्ध करना होगा मुझको हे कृष्ण ! उचित ॥

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥

है कौन कौरवों के साथी एवं शुभेच्छु यह जानूँगा ।
युद्धार्थ यहाँ आये हैं जो, उनको निज वैरी मानूँगा ॥

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥ २४ ॥

दोनों सेनाओं बीच मध्य, उत्तम रथ सुस्थापित करके ।
बोले श्रीकृष्ण धनंजय से, थोड़ा-सा प्रमुदित होकर के ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥

हैं भीष्म द्रोण सामने खड़े, उस ओर खिंची जो शत्रु रेख ।
हे पार्थ ! यहाँ समवेत हुये तू सब कौरव, नृप और देख ॥

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥

देखा अर्जुन ने वहाँ सभी, हैं स्वजन तथा कुछ वृद्ध बड़े ।
आचार्य पुत्र मामा भाई, प्रिय पौत्र आदि हैं सभी खड़े ॥

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥ २७ ॥

स्नेही श्वसुरों को पुत्रों को, देखा अर्जुन ने खड़े जहाँ ।
आश्चर्य हुआ, ज्यों ही देखा—सुहृदों मित्रों को खड़े वहाँ ॥

अर्जुन उवाच

कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥ २८ ॥

उन खड़े सभी स्वजनों को लख, सहसा ही उसका मन डोला ।
होकर करुणा से युक्त व्यथित, वह पार्थ, कृष्ण से यों बोला ॥

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ २९ ॥

हे कृष्ण ! स्वजन समुदाय देख, हो रहे शिथिल मम अंग सभी ।
तन काँप रहा, मुख सूख रहा, हो उठता है रोमांच कभी ॥

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ ३० ॥

गाण्डीव गिरा जाता कर से, जल रहा कृष्ण ! सारा शरीर ।
मैं नहीं खड़ा अब रह सकता, मन भ्रमित हो रहा अति अधीर ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥

हे कृष्ण ! आज लक्षण मुझको, देते विपरीत दिखाई सब ।
देखता नहीं कल्याण, तात ! स्वजनों को मार युद्ध में अब ॥

न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥

मैं नहीं चाहता विजय-राज्य, मैं नहीं चाहता सुख सारे ।
क्या अर्थ राज्य से, भोगों से ? क्या मुझको जीवन से प्यारे ॥

येषामर्थे कांक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ ३३ ॥

हैं जिनके लिये अभीप्सित यह, हे कृष्ण राज्य सुख और भोग ।
धन जीवन की आशा तजकर, हैं खड़े युद्ध में वही लोग ॥

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ ३४ ॥

आचार्य पुत्र चाचा दादा, पाऊँगा इनको अरे कहाँ ।
सम्बन्धी मामा श्वसुर पौत्र, साले जो दिखते अभी यहाँ ॥

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥ ३५ ॥

तीनों लोकों के मिलने पर भी, मार न सकता मैं सबको ।
फिर इस धरती के लिये कृष्ण ! बोलो कैसे मारूँ इनको ॥

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥

धृतराष्ट्र सुतों को मार-मार, बोलो प्रभु सुख कैसे होगा ?
यह मार आततायी ही सब, मुझको क्या पाप नहीं होगा ॥

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ ३७ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


इसलिए कृष्ण ! अपने बान्धव, धृतराष्ट्र पुत्र मारूँ कैसे ?
अपने कुटुम्ब को मार, कहो–होंगे हम सुखी अरे कैसे ?

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥ ३८ ॥

हैं सभी लोभ से भ्रष्ट चित्त, वे नहीं समझते इसे शाप ।
कुल क्षय से क्या दोष तथा, क्या मित्र द्रोह से अरे, पाप ॥

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ ३९ ॥

कुल क्षय से अधिक दोष संभव, क्या नहीं जानते इसे सभी ।
करना न चाहिए इस निमित्त सम्यक विचार क्या कृष्ण कभी ॥

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ ४० ॥

कुल के क्षय होने से सारे, कुल धर्म सनातन मिट जाते ।
इस धर्म नाश से सत्वर ही, कुल में सब पाप सिमिट आते ॥

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥

होने पर पाप वृद्धि भगवन ! कुल की स्त्रियाँ बिगड़ जातीं ।
दूषित होने पर ही तो वे, सन्तान वर्ण शङ्कर पातीं ॥

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥

कुल-घाती यह सार कुल को, नीचे नरकों में ले जाते ।
पिण्डोदक क्रिया नष्ट होते ही पितर सदा को गिर जाते ॥

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४३ ॥

इन संकरकारक दोषों से, सारे सुधर्म हैं मिट जाते ।
शाश्वत कुल जाति धर्म, भगवन ! इन सबके तत्क्षण मिट जाते ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥

हे कृष्ण ! विश्व में जिस जन का, कुल धर्म नष्ट हो जाता है ।
है सुना, घोर नरकों में वह, कर चिर निवास, दुख पाता है ॥

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥

होकर मतिमान सभी हम हैं, करने को उद्यत पाप महा ।
जो राज्य और सुख भोग हेतु, करते निज कुल का नाश, अहा ॥

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ ४६ ॥

है उचित शस्त्र लेकर के यदि, रण में मारें यह मुझे सभी ।
होगी श्रेयस्कर मृत्यु यही, प्रतिशोध न लूँगा–अरे, कभी ॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥

संजय बोले हो शोकमग्न, अर्जुन ऐसा ही कह कर के ।
रथ के पीछे जा बैठ गये, अपने शर-धनु को तज करके ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'अर्जुन विषाद योग' नामक प्रथम अध्याय संमाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# द्वितीय अध्याय

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

संजय बोले लख अर्जुन को, संतप्त नयन में नीर भरे ।
बोले मधुसूदन अमिय-वचन, जिससे अशान्त कुछ धीर धरे ॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

हे पार्थ ! तुम्हें विषमस्थल में, अज्ञान हुआ कैसे ? बोलो ।
यह है अकीर्तिकर अनुचित अति, नाशक सुस्वर्ग-आंखें खोलो ॥

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

तू बन न नपुंसक, कौन्तेय, है कठिन यहाँ पर कौन काज ।
तज, क्षुद्र हृदय की दुर्बलता, युद्धार्थ खड़ा हो विहँस आज ॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

अर्जुन बोले हे कृष्ण ! सुनो, शर-धनु ले कैसे युद्ध करूँ ।
मारूँ गुरु द्रोण, भीष्म को मैं, उससे ही पहिले क्यों न मरूँ ॥

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुंजीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥

इससे तो भिक्षा माँग, उदर-पोषण कर लेना शुभ होगा ।
यदि मार स्वजन-गुरु पूज्यों को, सुख भोगों को मैंने भोगा ॥

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यह भी तो नहीं जानते हम, जीतेंगे अथवा हारेंगे ।
जिनको न मार जीना चाहूँ, क्या पता कि वे ही मारेंगे ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥

कायरता से हो चुका नष्ट, मेरा स्वभाव, मैं भ्रान्त-नाथ ।
शरणागत शिष्य तुम्हारा हूँ, कहिए, शुभ जो-रख वरद हाथ ॥
कीजे प्रशस्त अब मेरा पथ, गुरु बन मुझको अपना लीजे ।
असमर्थ सदा मैं तुम समर्थ, कुछ ऐसी कृपा कोर कीजे ॥

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद् यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥ ८ ॥

पाऊँ यदि मैं देवत्व राज्य, धन-धान्य पूर्ण सुख भोग सभी ।
पर क्या कर पायेंगे यह सब, मेरे चिर दुख को दूर कभी ॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप ।
न योत्स्य इतिगोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ ९ ॥

कहकर ऐसा-हे हृषीकेश, मैं नहीं करूँगा युद्ध भूल ।
अर्जुन चुप हो अति खिन्न हुआ, ज्यों चुभे अजाने कई शूल ॥

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वच ॥ १० ॥

दोनों सेनाओं बीच सुनो, धृतराष्ट्र, कृष्ण हँसकर बोले ।
उस शोकयुक्त अर्जुन को लख, अपने मधु अरुण अधर खोले ॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥ ११ ॥

करता अशोच्य के लिए शोक, पण्डित सम बातें करता है ।
क्या कभी सुज्ञानी धर्म हेतु, जीवन देने से डरता है ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ १२ ॥

मैं था न कभी तू था न कभी, अथवा यह नृप थे कभी नहीं ।
होंगे न सभी यह क्या आगे, अर्जुन ऐसा भी सही नहीं ॥

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥

जैसे बालापन-युवा-जरा, तन में तीनों क्रम होते हैं ।
वैसे ही जीव देह पाता, पर धीर न मोहित होते हैं ॥

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥

सर्दी-गर्मी औ' सुखद-दुखद, यह विषय सदा ही नश्वर हैं ।
कौन्तेय ! सहन कर तू उनको, यह तो अनित्य, क्षणभंगुर हैं ॥

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखंधीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥

कर सकें न जिसको व्यथित विषय, नर वही मुझे अति भाता है ।
हे भारत ! दुख-सुख सम जिसको, वह धीर, मोक्ष पा जाता है ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥

अस्तित्व असत का नहीं, और, सत का भी यहाँ अभाव नहीं ।
तत्वज्ञ जानते हैं—केवल, सामर्थ्य किसी में और नहीं ॥

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥

तू जान उसी को अविनाशी, जिससे यह व्याप्त जगत सारा ।
इस अविनाशी का नाश करे, है कौन यहाँ पर बेचारा ॥

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ १८ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हैं नाश-रहित, अप्रमेय-नित्य जीवात्मा के यह सब शरीर ।
जो नाशवान क्षणभंगुर हैं, कर युद्ध, शोच मत–हो अधीर ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥

जो समझ आत्मा को हन्ता, औ' इसको मरा मानता है ।
दोनों ही नहीं जानते वे, यह मरा न मारा जाता है ॥

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।२०।

आत्मा न जन्मता मरता है, होकर न पुनः होने वाला ।
अज नित्य पुरातन शाश्वत है, यह नाश नहीं होने वाला ॥

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥ २१ ॥

जो पुरुष जान अज-अव्यय नित, अविनाशी इसे मानता है ।
वह कैसे किसको मरवाता, औ' कैसे किसे मारता है ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

ज्यों त्याग पुराने वस्त्रों को, नर नूतन-पट धारण करता ।
त्यों त्याग पुरानी देह जीव, अन्यान्य शरीरों को धरता ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ २३ ॥

शस्त्रादि काट सकते न इसे, पावक न जला सकती इसको ।
जल इसे न गीला कर सकता, मारुत न सुखा सकता इसको ॥

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ २४ ॥

अच्छेद्य और अक्लेद्य पार्थ, अदाह्य-अशोष्य पुरातन यह ।
है निसन्देह थिर-अचल नित्य, व्यापक सर्वत्र सनातन यह ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥

अव्यक्त-अचिन्त्य धनंजय यह, अविकारी कहते संत सभी ।
तू जान अमरता आत्मा की, होगा न शोक से व्याप्त कभी ॥

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥

यदि सदा जन्म लेने वाला, मरने वाला माने इसको ।
तो भी हे महाबाहु अर्जुन, है शोच्य कहो तू फिर किसको ॥

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ७ ॥

जग में जो पैदा होता है, निश्चित है उसकी मृत्यु पार्थ ।
मरने वाले का जन्म-सिद्ध, इसलिए न हो तू तनिक आर्त ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥

अव्यक्त जन्म से पूर्व और, अव्यक्त मरण के बाद सभी ।
होते हैं व्यक्त मध्य में ही, प्राणी तू चिन्ता कर न कभी ॥

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ।२९।

यह आत्म-तत्व है बड़ा गहन, कोई साश्चर्य देखता है ।
वैसे ही कोई और इसे, कहकर भी नहीं देखता है ॥
आश्चर्य-भांति सुनता कोई, कोई इसको न मान पाता है ।
कोई-कोई तो सुनकर भी, इस आत्मा को न जान पाता है ॥

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


कौन्तेय ! यह आत्मा तो, नित है अवध्य सबके तन में ।
इसलिए न कर तू तनिक सोच, सम्पूर्ण भूत-हित, निज मन में ॥

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥

शुभ क्षात्र-धर्म के नाते तो, तू भय करने के योग्य नहीं ।
इस धर्म युद्ध से बढ़ कर तो, क्षत्री को कुछ भी योग्य नहीं ॥

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ ३२ ॥

इस भाँति स्वर्ग के द्वार स्वयं, हे पार्थ सुनो खुल जाते हैं ।
कुछ भाग्यवान सच्चे क्षत्री, ही तो यह अवसर पाते हैं ॥

अथ चेत्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥

यदि नहीं करोगे धर्म-युद्ध, कैसे स्वधर्म पालन होगा ।
यश और कीर्ति खोकर कैसे, पापों का प्रक्षालन होगा ॥

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥

अपकीर्ति-कथा तेरी अर्जुन, चिरकाल रहेगी यह छाई ।
जो धीर जनों के लिए मरण से, कहीं अधिक है दुखदाई ॥

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ ३५ ॥

तू डरकर रण से भाग गया, सब महारथी यह मानेंगे ।
था श्रद्धास्पद तू जिन्हें पार्थ, वह तुच्छ तुझे तब जानेंगे ॥

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥ ३६ ॥

तेरे बैरी खुश हो करके, सब खोटी खरी सुनायेंगे ।
इससे बढ़ क्या दुख होगा, तुझको कायर बतलायेंगे ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥

मरने पर होगा स्वर्ग प्राप्त, जीते पर पृथ्वी राज्य विजय ।
'यह धरा वीर भोग्या' इससे, युद्धार्थ खड़ा होकर निश्चय ॥

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥

सुख-दुख सम, लाभालाभ और, जय हार समझ सम सभी कहीं ।
हो समर-हेतु तैयार वीर, तो पाप लगेगा कभी नहीं ॥

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥

है सुना सांख्य का ज्ञान अभी, निष्काम-कर्म का योग सुनो
सद्बुद्धियुक्त हो तू जिससे, छूटें भव-बन्धन—इसे सुनो ॥

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ ४० ॥

है कर्मयोग का आदि अमिट, औ बाधाओं से सदा परे ।
इसका थोड़ा-सा-भी साधन, कर देता क्षय सब भय गहरे ॥

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥ ४१ ॥

है निश्चयात्मक बुद्धि एक, हे कुरुनन्दन, इस शिव-पथ में ।
पर अज्ञ मानते हैं अनेक, होते सुचक्र बहु ज्यों रथ में ॥

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ ४२ ॥

मानते सकामी बकवादी, है स्वर्ग श्रेष्ठ केवल अर्जुन ।
इससे बढ़कर कुछ और नहीं, पाते, वे जान मूढ़ दुर्जन ॥

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥ ४३ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


ऐश्वर्य-भोग की प्राप्ति हेतु, अविवेकी मिथ्या दुख सहते ।
वे जन्म-कर्म फल दायिनि हित, शोभायुत वाणी को कहते ॥

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥

जो ऐसे भोगासक्त पुरुष, चित उनका चंचल हो जाता ।
है यही एक कारण जिससे, निश्चय का भान न हो पाता ॥

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ ४५ ॥

हैं विश्व-प्रकाशक त्रिगुण यहाँ, इससे तू निष्कामी ही बन ।
निर्द्वन्द्व, नित्य सत्त्वस्थ-योग, तज क्षेम आत्म-पारायण बन ॥

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ ४६ ॥

जैसे मिलते ही महा सिन्धु, रहती न अपेक्षा लघु सर की ।
होने पर साध्य-प्राप्त, यों क्या, आवश्यक्ता साधन वर की ॥

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥

अधिकार तुझे है करने का, केवल निष्काम-कर्म, नरवर ।
दे फलासक्ति को त्याग, यही, जीवन का सच्चा मर्म, सुघर ॥

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥

इसलिए असिद्धि-सिद्धि में सम, हो, त्याग सभी आसक्ति प्रबल ।
योगस्थ कर्म कर हे अर्जुन, यह ही है समता-ज्ञान नवल ॥

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥

इस बुद्धि-योग से, हे अर्जुन, सब कर्म सकाम, तुच्छ—हैं सुन ।
इसलिए शरण ले तू इसकी, तज फलासक्ति, अल्पज्ञ न बन ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥

जो बुद्धियुक्त है पुरुष, उसे, कब पाप पुण्य व्यापा अर्जुन ? ।
कर योग; इसी से छूटेंगे, तेरे सारे सु–कर्म–बन्धन ॥

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ ५१ ॥

हो बुद्धियोग से युक्त विज्ञ, कर्मों का फल तज देते हैं ।
वे जन्म-बन्ध से मुक्त हुये, अमृतमय पद पा लेते हैं ॥

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ ५२ ॥

जब मोह रूप दलदल से यह, तेरी मति, सुन–तर जायेगी ।
वैराग्य-सूर्य के उगते ही, तब अघ-रजनी ढर जायेगी ॥

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥

हो जायेगी यह बुद्धि विमल, सिद्धान्त और तर्कों से जब ।
निश्चय ही होगा प्राप्य तुझे, समता का योग, सुहावन तब ॥

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ ५४ ॥

सुन इस प्रकार प्रभु वचनों को, पूछे अर्जुन ने प्रश्न चार ।
लक्षण क्या समाधिस्थ जन का, समझा कर कहिए, जगाधार ! ॥
फिर कहो कृपाकर हे केशव, थिर-बुद्धि बोलता है कैसे ? ।
रहता कैसे ? यह बतलाकर, कहिये वह चलता है कैसे ?? ॥

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सुन गूढ़ प्रश्न अर्जुन के यह, श्रीकृष्ण सहज ही मुसकाये ।
एकाग्र चित्त हो सुनो सखे, यह प्रश्न मुझे भी अति भाये ॥
सब मनोकामनाओं को तज, सन्तुष्ट स्वयं जो हो जाता ।
जो आत्मा ही में करे रमण, वह ही थिर बुद्धि, कहा जाता ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥

उद्वेग-रहित है मन जिसका, दुख में सुख में न चाह जिसको ।
जो वीतराग भय-क्रोध-मुक्त, कहते थिर बुद्धि शान्त उसको ॥

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥

सर्वत्र स्नेह से रहित हुआ, जो शुभ में कभी प्रसन्न न हो ।
थिर-बुद्धि उसी की जो दुख पा, मन में किंचित् भी खिन्न न हो ॥

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥

कछुआ जैसे निज अंगों को, लेता समेट चारों दिशि से ।
थिर-बुद्धि इन्द्रियाँ सिमटे जब, वैसे ही विषयों की निशि से ॥

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥

हठ पूर्वक भोग त्याग करके, आसक्ति नहीं जा पाती है ।
केवल परमात्म-सुदर्शन से, यह तत्क्षण ही मिट जाती है ॥

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥

करते हैं इन्द्रिय-दमन-हेतु, विद्वान् अनेकों यत्न यहाँ ।
हर लेती हैं फिर भी यह मन, बलवती इन्द्रियाँ पार्थ, यहाँ ॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


कर सभी इन्द्रियाँ जो वश में, हो योग-युक्त, मत्पर होता ।
अर्जुन ! थिर बुद्धि उसी की जो, इन्द्रिय-आधीन नहीं होता ॥

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥

आसक्ति, विषय के चिन्तन से, होती इससे कामना नवल ।
पड़ने से विघ्न कामना में, होता है उद्भव क्रोध प्रबल ॥

क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥

उत्पन्न क्रोध से मोह, मोह से, सुस्मृति विभ्रम हो जाती ।
सुस्मृति विभ्रम से बुद्धिनाश, फिर इससे मृत्यु निकट आती ॥

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥

हो राग-द्वेष से हीन मनुज, इन्द्रिय-समूह वश है करता ।
भोगता हुआ वह विषयों को, मन में प्रसन्नता है भरता ॥

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥

मन में प्रसन्नता आते ही, दुख का अभाव हो जाता है ।
थिर होती बुद्धि शीघ्र उसकी, जिसका चित शुभ हो जाता है ॥

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ ६६ ॥

साधना-रहित नर के उर में, आस्तिकता-सुमति नहीं जैसे ।
नास्तिक को शान्ति न सुलभ, पार्थ, फिर शान्ति-रहित को सुख कैसे ?

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ ६७ ॥

विचरण करती इन्द्रियाँ-मध्य, मन जिस इन्द्रिय के साथ रहे ।
वह बुद्धि हरण कर लेती ज्यों, जल में नौका पा वायु वहे ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥

इन्द्रियाँ सभी विधि हैं जिसकी, विषयों से वश में, अरे पार्थ !।
थिर-बुद्धि उसी की होती है, वह कभी न होता आर्त, पार्थ !! ॥

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥

जो निशा सर्व भूतों की है, संयमी जागता है उस क्षण ।
जिसमें सब जन जागा करते, मुनियों की रात्रि वही निर्जन ॥

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७० ॥

परिपूर्ण सिंधु में आकर के, सरिता-जल रहता शान्त सदा ।
अविचल गंभीर जलधि भी क्या, हो सकता चंचल, क्षुब्ध कदा ?
इस भाँति विषय सारे जाकर, हो जाते जिसमें लीन सभी ।
पाता वह शाश्वत शान्ति परम, भोगों का इच्छुक नहीं कभी ॥

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥

सम्पूर्ण कामनाओं को तज, मद-हीन सदा जो हो जाता ।
निर्मम-निस्पृह होकर ही वह, नर शान्ति, परम पद पा जाता ॥

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ ७२ ॥

ब्राह्मी स्थिति को पाकर के, मोहित होता है कभी न नर ।
हे पार्थ ! मृत्यु आने पर भी, पाता वह ब्रह्मानन्द अमर ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का "सांख्य-योग" नामक
दूसरा अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# तृतीय अध्याय

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ १ ॥

यदि ज्ञान श्रेष्ठ है कर्मों से, जैसा कि आपने बतलाया ।
फिर घोर-कर्म हित क्यों करते, मुझको प्रेरित, यह क्या माया ॥

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ २ ॥

यह उलझन भरे वचन कहकर, प्रभु मुझे भ्रमित क्यों करते हो ।
कल्याण सुनिश्चित हो जिससे, वह कहने में क्यों डरते हो ॥

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ ३ ॥

बोले श्री कृष्ण—सुनो अर्जुन, निष्ठा हैं दो—बतलाया था ।
ज्ञानी को ज्ञान योग कहकर, योगी को कर्म बताया था ॥

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥

कर्मों के अनारंभ से तो, निष्कर्म नहीं हो सकते हैं ।
कर्मों के त्याग मात्र से ही, नर सिद्धि नहीं पा सकते हैं ॥

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥

बिन कर्म किये नर रह जाये, क्षण भर—यह संभव नहीं कभी ।
हो प्रकृति-गुणों के वश, निश्चित, करना पड़ते हैं कर्म सभी ॥

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मन से विषयों का चिन्तन कर, जो कर्म-इन्द्रियों को रोके ।
मिथ्याचारी पाखण्डी वह, कह मूर्ख उसे सब जग टोके ॥

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥

जो अनासक्त हो, इस मन से, इन्द्रियाँ स्ववश कर लेता है ।
कर कर्म इन्द्रियों से, जग में—वह यश अर्जित कर लेता है ॥

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः ॥ ८ ॥

कुछ भी न कर्म करने से तो, श्रेयस्कर करना कर्म श्रेष्ठ ।
बिन किये कर्म, तन-सिद्धि कहाँ? कर नियत कर्म अर्जुन ! यथेष्ट ॥

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥ ९ ॥

बन्धन के भय से कर्मों का, परित्याग न उचित, कभी प्रियवर ।
हो अनासक्त, परमेश्वर-हित, कर कर्म सदा सम्यक् सुन्दर ॥

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥

रच, यज्ञ प्रजा सह ब्रह्मा ने सबके हितार्थ था यही कहा ।
पूरी हो मनोकामनायें, इससे धन-मति-गुण-ज्ञान महा ॥

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥

मख से होंगे सुर तुष्ट, सत्य—वे करें तुम्हें भी मुदित सदा ।
हो आपस में यों सहयोगी, पाओ सुकीर्ति-कल्याण सदा ॥

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः ॥ १२ ॥

हो तुष्ट देव, बिन माँगे ही, देंगे प्रिय भोगों को सुन्दर ।
लोगे, यदि उनको दिये बिना, तो कहलाओगे तुम तस्कर ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥

होते सब पापों से विमुक्त, यज्ञावशिष्ट जो खाते हैं ।
निज हेतु पकाते जो पापी, वे तो पापों को पाते हैं ॥

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥

प्राणी होते अन्न से, और–इसकी उत्पत्ति वृष्टि से है ।
यह वृष्टि यज्ञ से होती है, मख की उत्पत्ति कर्म से है ॥

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥

तू जान कर्म को वेदोद्भव, अरु वेद सदा अविनाशी से ।
है इस प्रकार यज्ञ में ब्रह्म, परमाक्षर नित्य सदा ही से ॥

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ १६ ॥

जो सृष्टि-चक्र-अनुसार न चल, कर्मों को नहीं किया करता ।
पापायु मूढ़ भू-भार बना, कामी वह व्यर्थ जिया करता ॥

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १७ ॥

रहता जो आत्म-तृप्त मानव, आत्मा में ही सन्तुष्ट सदा ।
ऐसे आत्मारत को बोलो, हो सकता कोई कार्य कदा ॥

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥

करने से और न करने से, उसको होता कुछ खेद नहीं ।
तो भी वह करता जग-हितार्थ शुभ कर्म, किसी में भेद नहीं ॥

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


इससे तू होकर अनासक्त, कर्तव्य कर्म को कर निश्चय ।
पाता ऐसा नर शीघ्र ब्रह्म, अनुपम अविनाशी पद-अक्षय ॥

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥ २० ॥

आसक्ति-हीन कर्मों द्वारा जनकादि सिद्धि को प्राप्त हुये ।
फिर देख, लोक-संग्रह यों कर, जिससे तुमको अघ नहीं छुये ॥

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ २१ ॥

जो जो करता आचरण श्रेष्ठ, नर और वही करने लगते ।
जो कुछ कर देता, वह प्रमाण, उस पर चल जन तरने लगते ॥

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥ २२ ॥

है कुछ भी नहीं अप्राप्त मुझे, कर्तव्य न कोई शेष, पार्थ ।
तो भी सबके कल्याण-हेतु, करता रहता हूँ कर्म सार्थ ॥

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ २३ ॥

यदि, कुन्ती-पुत्र अतन्द्रित हो, मैं कोई कर्म न करूँ कभी ।
लग जाँय अनुकरण करने में, मेरा ही निश्चित मनुज सभी ॥

उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥ २४ ॥

रहने पर मेरे बिना कर्म, सब लोक भ्रष्ट हो जायेंगे ।
मैं बनूँ वर्ण-संकर-कर्ता, सब मृत्यु गोद सो जायेंगे ॥

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥ २५ ॥

करते ज्यों कर्मासक्त हुये, अज्ञानी अपने सभी काम ।
त्यों अनासक्त हो करे विज्ञ, जग-हित-शिक्षा के सभी काम ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥ २६ ॥

डाले न अज्ञ नर की मति में, भ्रम-बुद्धि-भेद विद्वान् कभी ।
हो योग-युक्त सब कर्म करे, उनसे करवाये वही सभी ॥

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥

होते हैं प्रकृति-गुणों द्वारा सब कर्म स्वयं ही हे अर्जुन ! ।
है मान बैठता—'मैं कर्ता'—फिर भी विमूढ़, दम्भी-दुर्जन ॥

तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥ २८ ॥

गुण और कर्म के वर्गों से, तत्वज्ञ न मोहित होता है ।
गुण सदा गुणों में निहित मान, आसक्त, न वह फिर होता है ॥

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् ॥ २९ ॥

जो प्रकृति-गुणों से मोहित हो, गुण और कर्म में लीन अभी ।
उन अज्ञ-मूढ़ लोगों को तो, विद्वान करे विचलित न कभी ॥

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ ३० ॥

तू ध्यान-निष्ठ मन से अर्जुन, सब कर्म मुझे ही अर्पित कर ।
हो निर्मम आशरहित, निर्भय—कर युद्ध, धर्म का पालन कर ॥

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥ ३१ ॥

जो कोई भी जन दोष-रहित, श्रद्धा से ऐसा करते हैं ।
वे सब कर्मों के मुक्त हुए, निस्पृह हो विचरण करते हैं ॥

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो चलें न मेरे इस मत पर, तुम उन्हें दोष-दर्शी मानो ।
उन मूढ़ चित्तवालों को तो, निश्चय ही सुपथ-भ्रष्ट जानो ॥

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३३ ॥

हो प्रकृति गुणों के वश, ज्ञानी-अज्ञानी करते कर्म यहाँ ।
निग्रह क्या कर सकता इसमें, उसमें इतनी सामर्थ्य कहाँ ॥

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥

सब इन्द्रिय-भोगों में सुस्थित, जो राग और है द्वेष, अहा ।
हो कभी न उन दोनों के वश, हैं यह पथ-बाधक शत्रु महा ॥

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ ३५ ॥

गुण-हीन स्वधर्म परम उत्तम, पर-धर्म नहीं हो सकता, वर ।
पर-धर्म सदा भयकारी अति, मरना स्व-धर्म में श्रेयस्कर ॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥ ३६ ॥

बल-पूर्वक और बिना इच्छा के कौन नियोजित है करता ।
हे कृष्ण ! कहो, किससे प्रेरित, हो नर यह पाप किया करता ॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥ ३७ ॥

उत्पन्न रजोगुण से होकर, यह काम-क्रोध ही महा-अशन ।
है यही कराता पाप सदा, है यही महा वैरी, अर्जुन ॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥ ३८ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


ज्यों अग्नि, धूम से आच्छादित, मल से दर्पण ढक जाता है।
ज्यों ढका 'जेर' से गर्भ, काम से त्यों सु-ज्ञान ढक जाता है॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥ ३९ ॥

यह काम, अग्नि के सदृश सुनो हरदम अतृप्त ही है रहता ।
है यही ज्ञानियों का वैरी, जिससे यह ज्ञान ढका रहता ॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥ ४० ॥

मन-बुद्धि और इन्द्रियाँ गेह, जिसमें यह काम सदा रहता ।
ढक ज्ञान, उन्हीं के द्वारा ही, जीवात्मा को मोहित करता ॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ४१ ॥

इसलिए पाण्डु-सुत ! तू पहिले, इन्द्रियाँ सभी अपने वश कर ।
विज्ञान-ज्ञान का नाशक जो, यह काम अरे, इसका वध कर ॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥ ४२ ॥

हैं सूक्ष्म-बली इन्द्रियाँ, और मन है इनसे सर्वथा परे ।
है बुद्धि, परे मन से आत्मा, मति से भी है अत्यधिक परे ॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ ४३ ॥

यों आत्म ज्ञान को जान पार्थ, मति के द्वारा मन वश में कर ।
फिर काम रूप दुर्जय रिपु का कर अन्त, अरे बन जा शंकर ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'कर्म योग' नामक
तीसरा अध्याय समाप्त ।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# चतुर्थ अध्याय

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥

था कल्प-आदि में यह अर्जुन, मैंने रवि के प्रति योग कहा ।
फिर कहा सूर्य ने मनुके प्रति, मनु ने निज सुत से इसे कहा ॥

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥ २ ॥

कर परम्परा से प्राप्त इसे, राजर्षि जनों ने जाना था ।
वह कालान्तर में हुआ लोप, जिसको महानतम माना था ॥

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥

वह ही अब योग पुरातन यह कहता हूँ मैं तेरे हितार्थ ।
है, क्योंकि भक्त तू सखा परम, सुन मर्म भरा शुभ, योग, पार्थ ॥

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥

है लिया आपने जन्म अभी, रवि बहुत पूर्व थे हुये, नाथ ! ।
था कहा कल्प के आदि इसे, कैसे मानूँ ? हे विश्वनाथ ॥

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥

हो चुके बहुत से तेरे भी मेरे भी जन्म यहाँ, अर्जुन ।
तू नहीं जानता उन सबको, पर मुझे ज्ञान है उनका, सुन ॥

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हो अज-अव्यय अविनाशी भी, मैं मनुज-रूप धारण करता ।
हो प्रकट योग माया से फिर, मारा भूभार हरण करता ॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥

जब-जब होती है धर्म-हानि, होती अधर्म की वृद्धि जहाँ ।
निश्चित ही, कुन्ती पुत्र ! सुनो तब-तब होता मैं प्रकट वहाँ ॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

रक्षा करने सत्पुरुषों की, करने दुष्टों का दमन सदा ।
सुस्थापित करने धर्म श्रेष्ठ, युग-युग में होता प्रकट सदा ॥

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वतः ।
त्यक्त्वा देह पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ ९ ॥

है दिव्य अलौकिक कर्म-जन्म मेरा, यों जो जानता सदय ।
हो पुनर्जन्म से मुक्त वही, पाता मुझको यह ध्रुव निश्चय ॥

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥

हो ज्ञान-रूप तप से पवित्र, भय-राग-क्रोध से हीन, सखे ।
वे मेरे शरणागत होकर पा चुके पूर्व में मुझे, सखे ॥

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥

मैं उनको वैसे भजता हूँ, जो मुझको जैसे भजता है ।
यह मर्म जानकर ही तो जन, मम पथ पर चल सब तजता है ॥

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥

प्रिय, सुनो सकामी पुरुषों को, देवों की पूजा भाती है ।
थोड़े श्रम से ही शीघ्र उन्हें, कर्मजा-सिद्धि मिल जाती है ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥

ब्राह्मण-क्षत्रिय औ, वैश्य-शूद्र, गुण-कर्म-वर्ग से बने सभी ।
रच उन्हें, अकर्ता हूँ फिर भी, मुझको कर्ता मत मान कभी ॥

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥ १४ ॥

निस्पृह मैं कर्मों के फल से, कर सकते कर्म न लिप्त कभी ।
जो मुझे जानता, हो जाता, सारे कर्मों से मुक्त तभी ॥

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥

यों जान, पूर्वजों के द्वारा, जो किया गया कर्तव्य-कर्म ।
हो जिससे हृदय शान्त पावन, कर तू वे ही कर्म धर्म ॥

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥

क्या कर्म ? और क्या है अकर्म ? इसमें बुध भी भ्रम जाते हैं ।
कहता वह कर्म, जान जिससे, सब भव-बन्धन कट जाते हैं ॥

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ १७ ॥

है क्या स्वरूप इन दोनों का, एवं विकर्म का भी अर्जुन ?
जानना चाहिए, हमें सभी—है क्योंकि, कर्म-गति बड़ी गहन ॥

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥

जो लखे कर्म में ही अकर्म, देखे अकर्म में कर्म सदा ।
सम्पूर्ण - कर्म - कर्ता योगी, वह ही धीमान महान सदा ॥

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


कामना - सहित, संकल्प - हीन, हैं जिसके सारे कार्य यहाँ।
ज्ञानाग्नि - दग्ध हो चुके कर्म, ज्ञानी भी कहते उसे महा॥

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः ॥ २० ॥

सांसारिक - आश्रय त्याग सभी, जो हरदम तृप्ति लिया करता।
तज फलासक्ति हो कर्म-निरत, वह है कुछ भी न किया करता॥

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ २१ ॥

है जीत लिया तन-मन जिसने, सम्पूर्ण परिग्रह को तज कर!
होता न पाप को प्राप्त कभी, करके वह दैहिक-कर्म सुघर!!

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ २२ ॥

जो स्वतः-प्राप्ति-सन्तुष्ट, और—है द्वन्द्वातीत विमत्सर नर!
बँधता न कर्म करके भी वह, सम सिद्धि-असिद्धि जिसे,नरवर!!

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ २३ ॥

यज्ञार्थ-कर्म करते जो जन, होकर निर्भय, आसक्ति-हीन।
सम्पूर्ण कर्म कटते उसके, वह मुक्त-ब्रह्म में सदा लीन॥

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥

है अर्पण ब्रह्म, ब्रह्म हवि भी, ब्रह्माग्नि, ब्रह्मकर्तादि हुतम्।
उस ब्रह्म-कर्म-युत जन द्वारा, इसलिए प्राप्य भी ब्रह्म शुभम्॥

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥

योगी जन अन्य, किया करते, हैं देव-यज्ञ सम्यक् प्रकार।
करते हैं ब्रह्म - अग्नि में हवि—मख को मख के द्वारा विचार॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ २६ ॥

श्रोतादिक सभी इन्द्रियों को, कुछ संयम-अग्नि हवन करते ।
कुछ इन्द्रियाग्नि में शब्दादिक, विषयों को हवन हेतु धरते ॥

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥

सम्पूर्ण इन्द्रियों की चेष्टा, औ, प्राणों के व्यापारों को ।
वे ज्ञान-दीप्त योगानल में, कर हवन न ध्याते औरों को ॥

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ २८ ॥

करते हैं द्रव्य - यज्ञ कोई, तप - योग - यज्ञ करते कोई ।
करके कुछ तीक्ष्ण अहिंसा-व्रत, फिर ज्ञान-यज्ञ करते कोई ॥

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥

कुछ कर अपान को प्राण बीच, कुछ कर अपान में प्राण हवन ।
गति रोक अपान-प्राण की कुछ, करते हैं प्राणायाम सुजन ॥

अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥

करते प्राणों में प्राण हवन, नियताहारा कुछ योगी जन ।
यज्ञों से नष्ट हुआ कल्मष जिनका, वे यज्ञ - विज्ञ हैं जन ॥

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥

पा जाते ब्रह्म सनातन, जो—यज्ञों का ज्ञानामृत पीते ।
हैं यज्ञ-हीन को लोक दुखद, परलोक कहो कैसे जीते ॥

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हैं बहु प्रकार के यज्ञ जिन्हें वेदों ने जग-हित गाया है।
तू समझ उन्हें सबको 'कर्मज' ले जान 'तत्व' जो भाया है ॥

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ३३ ॥

है द्रव्य-यज्ञ से श्रेष्ठ, पार्थ! यह ज्ञान यज्ञ, तू उर धर-ले ।
हो जाते लीन ज्ञान में सब, यह कर्म-सोच तू कुछ कर ले ॥

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥

करके प्रणाम, सेवायुत हो, तू कर विज्ञों से प्रश्न, सुधर ।
मर्मज्ञ, तत्वदर्शी-ज्ञानी, तुझको देंगे उपदेश अमर ॥

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव ।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥ ३५ ॥

जिसको कि जानकर हे अर्जुन! फिर होगा तुझको मोह नहीं ।
बन जायेगा तू समदर्शी, होगा न किसी से द्रोह कहीं ॥

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥

यदि सभी पापियों से बढ़ तू, है अधिक पाप करने वाला ।
इस ज्ञान-नाव द्वारा निश्चित तर जायेगा, मति भ्रम वाला ॥

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ ३७ ॥

प्रज्वलित अग्नि ज्यों ईंधन को, कर देती भस्मसात अर्जुन!
वैसे ही ज्ञान-अग्नि करती-कर्मों को भस्मसात, ले सुन ॥

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥ ३८ ॥

है नहीं ज्ञान के सम पावन कुछ भी साधन ऐसा सुन्दर!
स्वयमेव समत्व-योग द्वारा पाता नर आत्मा-अनुभव कर ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥

जो श्रद्धावान जितेन्द्रिय जन सत्कर्म–परायण हो जाता ।
करके वह ज्ञान प्राप्त सत्वर, चिर शान्ति अचल है पा जाता ॥

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ ४० ॥

जो श्रद्धा-रहित, अज्ञ-भ्रम-युत उसका सब सुख खो जाता है ।
संशय-युत जन का लोक और परलोक भ्रष्ट हो जाता है ॥

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥ ४१ ॥

कर दिये समत्व योग द्वारा, भगवत-अर्पण हैं कर्म सभी ।
कट गये ज्ञान से भ्रम जिसके उसको न बाँधते कर्म कभी ॥

तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४२ ॥

निष्काम-योग में सु-स्थित हो, अज्ञान देख, मत हो अधीर !
तू काट ज्ञान-असि से संशय, युद्धार्थ खड़ा हो—कर्मवीर !!

श्रीमद्भगवद्गीता का 'ज्ञान कर्म संन्यास योग' नामक
चौथा अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# पंचम अध्याय

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ १ ॥

हे कृष्ण ! कभी संन्यास श्रेष्ठ, फिर कभी बताते योग, अहो !
दोनों में से जो एक श्रेय, मुझसे निश्चय कर वही कहो !!

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २ ॥

वैसे तो अर्जुन, योग और संन्यास उभय हैं भवहारी ।
है कर्म-योग-निष्काम श्रेष्ठ, अति सुलभ और मङ्गलकारी ॥

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

करता न द्वेष-आकांक्षा जो, संन्यासी वही नित्य, अर्जुन ।
निर्द्वन्द्व, उसे कब व्याप सका, सर्वशः मुक्त-यह भव-बन्धन ॥

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥ ४ ॥

है 'सांख्य' 'योग' यह अलग-अलग कहते हैं मूढ़, न पंडितजन ।
पाते साधक परमेश्वर को, दोनों का कर सम्यक साधन ॥

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥

पाते जो ज्ञानी परमधाम, योगी भी उसको पाते हैं ।
समझें जो 'सांख्य'-'योग' को सम, वे ही यथार्थ लख पाते हैं ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org


संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥

निष्काम-कर्म के बिना कहो, संन्यास सुलभ कैसे होगा ।
निष्काम-कर्म-योगी मुनि को, वह ब्रह्म अलभ कैसे होगा ॥

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ७ ॥

जो विजितात्मा है शुद्धमना, जो इन्द्रिय-लोलुप नहीं कभी ।
समदर्शी योग-युक्त जन को, कर सकते कर्म न लिप्त कभी ॥

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्छृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्छ्वसन् ॥ ८ ॥

तत्वज्ञ 'सांख्य-योगी' लखता, सुनता, छूता, सूँघता हुआ ।
खाता, जाता, बोलता हुआ, सोता एवं त्यागता हुआ ॥

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ ९ ॥

लेता वह श्वाँस, ग्रहण करता, मींचता नेत्र खोलता हुआ ।
इन्द्रियाँ स्वतः ही वर्त रहीं, मानें जैसे कुछ नहीं हुआ ॥

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ १० ॥

जो सभी कर्म प्रभु अर्पित कर, आसक्ति-त्याग-नित कर्म करे ।
ज्यों कमल-पत्र जलसे न लिप्त, त्यों वह पापों से सदा परे ॥

कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

निष्काम कर्म योगी केवल, इन्द्रिय-मन-बुद्धि-देह से भी ।
करते हैं आत्म-शुद्धि के हित, आसक्ति त्यागकर-कर्म सभी ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥ १२ ॥

प्रभु-अर्पित कर कर्मों के फल, वह युक्त शान्ति है पा जाता ।
हो फलासक्त, वह नर अयुक्त—कामना-रज्जु से बँध जाता ॥

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ १३ ॥

बन सदा अकर्ता, वशी-पुरुष, आत्मा में सुस्थित रहता है ।
नौ द्वारे वाले तन गृह में, वह धीर जितेन्द्रिय बसता है ॥

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥

कर्तृत्व-कर्म, कर्मों के फल, संयोग न रचता ईश कभी ।
गुण सदा वर्तते हैं गुण में, यों प्रकृति वर्तती सहज सभी ॥

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥ १५ ॥

करता न ग्रहण शुभ-कर्म, पाप ईश्वर, यह निश्चित ही जानो ।
पर ढका ज्ञान, माया द्वारा—इससे सब मोहित हैं—मानो ॥

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञान प्रकाशयति तत्परम् ॥ १६ ॥

पर, आत्म-ज्ञान द्वारा जिनका, अज्ञान हृदय से हरता है ।
वह ज्ञान-सूर्य के सदृश स्वयं ही ब्रह्म प्रकाशित करता है ॥

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ १७ ॥

तद्रूप बुद्धि-मन है जिनका, जो ब्रह्म-परायण, निष्ठ सदा ।
निष्पाप ज्ञान द्वारा ही, वे—हैं पुनर्जन्म से मुक्त सदा ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुचि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ १८ ॥

द्विज श्रेष्ठ, स्वपच में भी ज्ञानी, कोई अन्तर न परखते हैं ।
चाहे हाथी हो, श्वान, धेनु–सम-भाव सभी में रखते हैं ॥

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ १९ ॥

है निरत, साम्य में मन जिनका, संसार - मुक्त हैं, ऐसे नर !
निर्दोष ब्रह्म - सम ही हैं वे, नित ब्रह्म लीन योगी नरवर !!

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ २० ॥

जो प्रिय को पाकर मुदित न हो, पा अप्रिय को उद्विग्न कभी ।
संशय-विहीन थिर-बुद्धि, ब्रह्म-विद, आत्मलीन वह, कहें सभी ॥

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् ।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥ २१ ॥

आसक्ति-रहित जो भोगों में, पाता प्रभु-ध्यान-जनित सुख को ।
वह ब्रह्मयोग-युत महापुरुष, अनुभव करता अक्षय सुख को ॥

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥

हैं क्षणिक-सुखद, सब भोग सदा, होते यथार्थ में दुखदाई ।
हैं वे अनित्य, रमते न सुबुध–इसमें ही है हित, सच भाई ॥

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ २३ ॥

जो काम - क्रोध आवेग प्रबल, सहने में सक्षम हो जाता !
वह ही योगी, चिर सुखी पुरुष, उनसे अजेय फिर हो जाता ॥

योऽन्तः सुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ २४ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो अन्तः सुखी, आत्मरत नित, है जिसकी आत्मा में प्रकाश।
निश्चय वह योगी करता है, उस पूर्ण ब्रह्म में ही निवास॥

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः॥ २५॥

रत, सर्व-भूत-हित, नष्ट पाप, भ्रम रहित सदा हैं, जो जन भी।
एकाग्र चित्त, वे ध्यान मग्न—पाते हैं ब्रह्म महान, सभी॥

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्॥ २६॥

जो काम-क्रोध से हैं वियुक्त, जानें सब जग में ब्रह्म व्याप्त!
है जीत लिया मन, उनको, तो—सर्वत्र सदा है ब्रह्म प्राप्त!!

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ॥ २७॥

सम्यक प्रकार से नयन-दृष्टि, जो भृकुटि-मध्य संयम करके।
तज, विषय-भोग सारे अपान, औ, प्राण वायु को सम करके॥

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः॥ २८॥

इन्द्रियाँ-बुद्धि-मन जीत चुका, जो मोक्ष-परायण सदा युक्त।
वह मुनि, इच्छा-भय-क्रोध-रहित होकर, रहता है सदा मुक्त॥

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति॥ २९॥

जो यज्ञ और तप का भोक्ता, मेरे को सदा जानता है।
सबका प्रिय सुहृद, महेश्वर मैं, यह जान, शान्ति वह पाता है॥

श्रीमद्भगवद्गीता का संन्यास योग' नामक
पाँचवाँ अध्याय समाप्त।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥ १ ॥

जो सभी क्रिया-त्यागी निरग्नि, संन्यासी योगी कभी न वह ।
पर, फलासक्ति तज, जो करता योगी सु-कर्म संन्यासी वह ॥

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ॥ २ ॥

जिसको संन्यास कहा वह ही है योग, दत्तचित हो तू सुन !
संकल्पों के संन्यास बिना, है कौन यहाँ योगी ? अर्जुन !!

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥

यदि योग साधना का इच्छुक, है हेतु सदा निष्काम-कर्म ।
पर, योगारूढ़ जनों को तो संकल्प-शमन ही हेतु धर्म ॥

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥

आसक्ति न इन्द्रिय-भोगों में, कर्मों में जो आसक्त न हो ।
ऐसा संकल्प सर्व त्यागी, उसको ही योगारूढ कहो ॥

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ५ ॥

उद्धार स्वयं तू अपना कर, यह दुर्लभ तन क्यों खोता है ।
है अन्य न कोई शत्रु-मित्र, अपना आत्मा ही होता है ॥

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो जीत स्वयं को लेता है, उसका आत्मा ही मित्र, सदा ।
जो अपने को न जीत पाता, उसका आत्मा ही शत्रु सदा ॥

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥ ७ ॥

है सदा जितात्मा, शान्त और मानापमान में है जो सम ।
शीतोष्ण और सुख-दुख में सम, ऐसे नर को कुछ अधिक न कम ॥

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥ ८ ॥

जो है कूटस्थ, जितेन्द्रिय औ' विज्ञान-ज्ञान से तृप्त जान ।
सम, स्वर्ण और मिट्टी-पत्थर जिसको, वह योगी ही महान ॥

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९ ॥

जो उदासीन-मध्यस्थ-सुहृद-वैरी—इन सब में है समान ।
पापिष्ट, साधु, बान्धव, वयस्क में जो सम, वह है महान ॥

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥

जो योगी, संग्रह-हीन, जितेन्द्रिय हो नित है वासना-रहित ।
हो एकाकी सुस्थित हो, निज आत्मा को प्रभु में करे निरत ॥

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥

कुश-वसन और मृगछाला को शुचि-शुद्ध भूमि में ही रखकर ।
अपने आसन को उच्च न रख, नीचे में भी न करे सुस्थिर ॥

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥ १२ ॥

उस आसन पर फिर बैठ, स्वस्थ हो—निज मन को एकाग्र करे ।
बन सदा जितेन्द्रिय, आत्म-शुद्धि हित, अर्जुन योगाभ्यास करे ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥

काया-शिर-ग्रीवा को समान, दृढ़ धारण करते हुए अचल ।
नासाग्र-भाग अपना लखकर, देखे न कहीं फिर, हो अविचल ॥

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥ १४ ॥

भय-रहित, ब्रह्मचारी, प्रशान्त-आत्मा—सर्वार्थ मुक्त होकर ।
मन वश में कर, मम निरत चित्त, मत्पर निश्चय सुस्थिर होकर ॥

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥ १५ ॥

यों नित स्वाधीन-मना बनकर, मेरे में सुस्थित हो जाता ।
योगी, निर्वाण परम पाकर—वह शान्ति सहज ही पा जाता ॥

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ १६ ॥

होता न सिद्ध यह योग, बहुत खाने—कम खाने वाले को ।
अति स्वप्न-शील को नहीं, नहीं अत्यन्त जागने वाले को ॥

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ १७ ॥

नियमित आहार-विहारी को, सोने या जगने वाले को ।
दुख नाशक-योग प्राप्त होता, शुभ चेष्टा करने वाले को ॥

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥

हो जाता सुस्थित चित्त नियत, जब परमात्मा में लीन सदा ।
निस्पृह वह, सभी कामना तज—हो जाता योगी व्यक्ति तदा ॥

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


है रहित वायु से सुस्थल में ज्यों दीप सदा जलता रहता ।
त्यों ही निशि-दिन योगी का चित, परमात्म-ध्यान में रत रहता ॥

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥ २० ॥

यह चित्त निरुद्ध योग से हो, हो जाता है उपराम यदा ।
करता साक्षात ब्रह्म का वह, आत्मा में रहता तुष्ट सदा ॥

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥ २१ ॥

इन्द्रियातीत जो बुद्धि-ग्राह्य, आनन्द अनन्त प्राप्त करता ।
तब सुस्थित इसी अवस्था में योगी प्रभु-लीन सदा रहता ॥

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ २२ ॥

परमात्म-लाभ से बढ़कर जो मानता नहीं कुछ और यहाँ ।
दुख, उसको लीन-अवस्था में, करदे विचलित सामर्थ्य कहाँ ॥

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥

जो दुःख रूप-भव-योग-रहित, वह योग–ज्ञेय है हे अर्जुन ।
निश्चय पूर्वक करणीय-योग, वह तत्पर चित से, ले तू सुन ॥

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥ २४ ॥

संकल्पों से होने वाली, सम्पूर्ण कामनाओं को तज ।
कर इन्द्रिय-गण, मन द्वारा वश, सम्यक-प्रकार से उसको भज ॥

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् ॥ २५ ॥

अतिरिक्त न है प्रभु से कुछ भी, सुस्थित होकर वह ध्यान धरे ।
फिर शनैः शनैः हो शान्त, धैर्ययुत मति से मन स्वाधीन करे ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वश नयेत् ॥ २६ ॥

यह अस्थिर-चंचल मन, जिस-जिस कारण से यहाँ-वहाँ विचरे ।
उस उससे उसको रोक, पुनः परमात्मा में लव-लीन करे ॥

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥

जो है प्रशान्त-मन, पाप-रहित, जिसका रज-गुण हो शान्त गया ।
उस जीवन-मुक्त सु-योगी को, मिलता है परमानन्द नया ॥

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ २८ ॥

यों आत्मा को कर ब्रह्म-निरत, निर्द्वन्द्व सदा विचरण करता ।
प्रभु-प्राप्ति-रूप-सुख को वह नित, आत्मा में है अनुभव करता ॥

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ २९ ॥

सर्वत्र, योग-युक्तात्मा वह, फिर समदर्शी हो जाता है ।
सम्पूर्ण भूत आत्मा में, जो आत्मा को सब में पाता है ॥

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ ३० ॥

जो देखे मुझे सभी में वह, उन सब को मुझमें पाता है ।
मैं उससे विलग नहीं, अर्जुन ! वह मुझसे विलग न जाता है ॥

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ३१ ॥

सब भूतों में सुस्थित मुझको एकत्व-भाव से जो भजता ।
सर्वथा वर्तता वह योगी मुझको है नहीं कभी तजता ॥

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ ३२ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो योगी अपने सदृश सभी, भूतों को देखे है महान।
सम देखे, सब में सुख-दुख भी हे पार्थ ! वही योगी प्रधान॥

अर्जुन उवाच

यो यं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥ ३३ ॥

है साम्य-भाव से ध्यान योग, जो कहा आपने मधुसूदन।
थिर नहीं देखता मैं उसको, हे हरि चंचल-होने से मन॥

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥

हे कृष्ण ! क्योंकि मन अति चंचल, है दृढ़ प्रमथन-स्वभाव वाला।
इसलिए वायु की भाँति सदा, दुष्कर वह वश होने वाला॥

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥

श्रीहरि बोले-मन अति चंचल, दुर्निग्रह, कुन्ती-सुत-अर्जुन।
वश में होता, यह करने से वैराग्य तथा अभ्यास कठिन॥

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥

दुष्प्राप्य उन्हें है योग सदा, जिनका मन रहता चपल-व्यथित।
साधन से पाना सहज उसे, मन वश जिसके-यह मेरा मत॥

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ३७ ॥

बोले तब पार्थ-योग विचलित है, शिथिल-यत्न वाला जो जन।
वह योग सिद्धि को प्राप्त न हो, पाता है किस गति को भगवन ?

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ३८ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


क्या ब्रह्म-प्राप्ति के पथ में वह, सचमुच विमूढ़ हो जाता है ?
वह छिन्न-भिन्न घन के सदृश्य क्या उभय-भ्रष्ट हो जाता है ??

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥

मेरे इस संशय को अशेष करने में तुम केवल समर्थ ।
तज तुम्हें मात्र मेटे यह भ्रम, है कौन यहाँ ऐसा समर्थ ॥

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥

बोले श्रीकृष्ण-कहीं ऐसा, नर नाश नहीं होने वाला ।
पाता न कभी दुर्गति अर्जुन, शुभकर्म सदा करने वाला ॥

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥

कर प्राप्त श्रेष्ठ लोकों को वह, उनमें वर्षों तक रहता है ।
फिर पुण्यवान-श्रीमानों के गृह योग-भ्रष्ट तन धरता है ॥

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥ ४२ ॥

अथवा धीमान योगियों के कुल में वह जन्म ग्रहण करता ।
दुर्लभ है ऐसा जन्म यहाँ, जो नहीं सभी को है मिलता ॥

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥ ४३ ॥

वह पूर्व-संस्कारों से ही अर्जित कर लेता बुद्धि-योग ।
फिर ब्रह्म-प्राप्ति-हित रत रहता, तज आशायें सब विषय-भोग ॥

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥ ४४ ॥

वह पूर्व संस्कारों के वश आकर्षित होता उसी ओर ।
वेदोक्त, सकाम-कर्म-फल तज, पा जाता प्रभु की कृपा-कोर ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥ ४५ ॥

योगी अत्यधिक यत्न से ही, सब पाप-मुक्त हो जाता है ।
बहु जन्म-सिद्धि को प्राप्त हुआ, वह अक्षय-पद को पाता है ॥

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥ ४६ ॥

ज्ञानी, सकाम-कर्मीजन से एवं तपस्वियों से बढ़कर ।
है योगी सर्वश्रेष्ठ, इससे अर्जुन तू भी बन योगी, वर ॥

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ ४७ ॥

सम्पूर्ण योगियों में भी जो श्रद्धालु मुझे नित भजता है ।
वह योगी मुझको परम श्रेष्ठ कामादि सभी जो तजता है ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'आत्म संयम योग' नामक
छठवाँ अध्याय समाप्त ।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ १ ॥

बोले श्रीकृष्ण—मदाश्रय हो जो लगे योग में, हे अर्जुन ।
संशय-विहीन, ज्यों सब-गुण-युत जानेगा मुझको उसको सुन ॥

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥

कहता सम्पूर्ण रूप से मैं यह तत्वज्ञान अति मर्म-युक्त ।
है जिसे जान कर शेष न कुछ जग में, हो जाता वही मुक्त ॥

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ३ ॥

करता है यत्न सहस्रों में कोई ही, एक मुझे पाने ।
उनमें से कोई हो मत्पर सह तत्व मुझे निश्चय जाने ॥

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥

पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-नभ-मन, औ' बुद्धि तथा है अहंकार ।
है ऐसी यह अष्टात्म प्रकृति, जो है विभक्त सम्यक् प्रकार ॥

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ५ ॥

है 'अपरा प्रकृति' पाण्डु नन्दन ! यह उक्त,-दूसरी भी ले सुन ।
वह कहलाती है 'परा प्रकृति' जिससे कि जगत का उद्भव, गुन ॥

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सम्पूर्ण भूत इन दोनों से, धारण करते हैं जन्म, भूप ।
मैं ही हूँ विश्व-प्रभव-कारण, मैं ही हूँ इसका प्रलय-रूप ॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ७ ॥

मेरे सिवाय है नहीं अन्य कुछ भी, देखो अर्जुन विचार ।
यह जगत, सूत में मणि-गण-इव-है गुथा मुझी में, निर्विकार ॥

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ ८ ॥

शशि और सूर्य में हूँ प्रकाश, हे अर्जुन ! मैं हूँ जल में रस ।
सब वेदों में हूँ प्रणव, शब्द नभ में, पुरुषों में हूँ पौरुष ॥

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥

पृथ्वी में पुण्य-गंध, सारे भूतों में हूँ उनका जीवन ।
मैं हूँ तपस्वियों में शुचि तप, हूँ तेज, अग्नि में–हे अर्जुन ॥

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥

हे पार्थ ! सभी भूतों का ही तू बीज सनातन—जान मुझे ।
मतिमानों की हूँ बुद्धि, तेज तेजस्वी-जन में मान मुझे ॥

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥

आसक्ति और कामना-रहित, बलवानों का बल मैं, अर्जुन ।
धर्मानुकूल सब भूतों में हूँ काम, इसे निर्भय हो सुन ॥

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥

सत-रज से और तमोगुण से होने वाले यह भाव सभी ।
मेरे से ही हैं हुये, किन्तु मैं उनमें रहता नहीं कभी ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ॥ १३ ॥

इन तीन गुणों के भावों से, मोहित है, अर्जुन विश्व सभी ।
अव्यय, त्रिगुणों से परे–मुझे, पाता न जान, नर सत्य कभी ॥

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ १४ ॥

यह त्रिगुणमयी मेरी माया, अत्यन्त अलौकिक है दुस्तर ।
इस माया से वे तर जाते, भजते हैं नित्य मुझे जो नर ॥

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥ १५ ॥

अपहृत है ज्ञान, नराधम जो—आसुरी भाव में लिप्त सभी ।
ऐसे वे पापी महामूढ़ मुझको भजते हैं नहीं कभी ॥

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ १६ ॥

केवल भजते हैं वही मुझे, जो सुकृत-सदा करते, अर्जुन ।
ज्ञानी, अर्थार्थी, आर्त और जिज्ञासु–यही चारों निशि-दिन ॥

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥ १७ ॥

जो नित्य-मुक्त है, एक भक्ति, वह ही ज्ञानी अति उत्तम है ।
मैं हूँ उस ज्ञानी को अति प्रिय, वह ज्ञानी मुझे अधिक प्रिय है ॥

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥ १८ ॥

यह सब उदार, पर—ज्ञानी तो मेरा स्वरूप ही है निश्चित ।
है युक्तात्मा, अति उत्तम वह मेरे में ही सम्यक्–सुस्थित ॥

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो जान अनेकों जन्मों में, समझे-ईश्वर सर्वत्र व्याप्त ।
जो भजता मुझको इस प्रकार वह दुर्लभ, मुझको सदा प्राप्त ॥

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ २० ॥

अपने स्वभाव से प्रेरित हो, हृतज्ञान-नियम धारण करते ।
वे सभी सकामी भक्त अन्य देवों का हैं पूजन करते ॥

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥ २१ ॥

जो भक्त सकामी जिस सुर की श्रद्धा से है पूजा करता ।
श्रद्धा कर अचल उसी के प्रति, विश्वास उसी में हूँ भरता ॥

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥ २२ ॥

जो जन उस श्रद्धा से युत हो, उस सुर की पूजा है करता ।
मेरे द्वारा ही वह उससे भोगों को प्राप्त किया करता ॥

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ २३ ॥

जो अल्प बुद्धि, हैं सुर-पूजक, देवों को ही वे पाते हैं ।
पर, मेरे भक्त अन्त में तो निश्चित मुझको पा जाते हैं ॥

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥

अव्यक्त ब्रह्म को जो अव्यय-अक्षय-अज मान नहीं पाते ।
अनुपम-अविनाशी-भाव मूढ़, वे मेरा जान नहीं पाते ॥

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयंनाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥ २५ ॥

प्रत्यक्ष नहीं होता सबको, मैं अपनी ही माया द्वारा ।
इसलिए जान पाते न मूढ़, मैं पुरुष सनातन हूँ न्यारा ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥ २६ ॥

गत-वर्तमान-आगत के सब भूतों को मैं जानता, पार्थ ।
पर, कोई भी श्रद्धा-विहीन, मुझको न जान पाता यथार्थ ॥

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥ २७ ॥

हो रहे सभी प्राणी जग में सुख दुःख आदि से दीन-व्यथित ।
हे पार्थ, द्वेष-इच्छा करती उन लोगों को अति ही मोहित ॥

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ २८ ॥

पर, श्रेष्ठ-पुरुष निष्काम-भाव से पुण्य-कर्म नित करते हैं ।
वे राग-द्वेष से मुक्त हुये, दृढ़व्रती मुझे ही भजते हैं ॥

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥ २९ ॥

जो जरा-मरण से मुक्ति-हेतु मेरा आश्रय अपनाते हैं ।
वे ब्रह्म अखिल, कर्मों को भी सम्यक्, अध्यात्म जानते हैं ॥

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥

जो साधिभूत अधिदैव सहित, जानते मुझे सर्वात्म-रूप ।
वे युक्त चित्त, पा, मुझको ही—पड़ते न कभी मोहान्ध-कूप ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'ज्ञान विज्ञान योग' नामक
सातवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# अथाष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥ १ ॥

अर्जुन बोले क्या ब्रह्म ? कर्म क्या है ? अध्यात्म बतादें क्या ?
अधिभूत किसे कहते, भगवन ? अधिदैव मुझे समझा दें क्या ?

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥ २ ॥

अधियज्ञ कौन है ! यहाँ कृष्ण ! क्यों कर शरीर में बतलाते ?
फिर अन्त समय मनुजों द्वारा, तुम कैसे हो जाने जाते ??

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥

अर्जुन, अक्षर है ब्रह्म, और जीवात्मा यह–अध्यात्म, सुनो ।
जो भूत-भाव-उद्भव-कर है–वह कर्म कहाता, इसे गुनो ॥

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥ ४ ॥

नश्वर पदार्थ अधिभूत यहाँ, अधिदैव कहाता है चेतन ।
सब देह धारियों के तन में मैं ही अधियज्ञ, अरे अर्जुन ॥

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ५ ॥

जो पुरुष प्रयाण काल में भी, कर याद–देह तज जाता है ।
है नहीं तनिक इसमें 'संशय', वह शीघ्र मुझे ही पाता है ॥

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो जन जब भी जो भाव लिये, अपनी यह देह त्यागता है।
उसको होता है प्राप्त वही, निश्चय वह जिसे चाहता है ॥

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ ७ ॥

इसलिए अहर्निश हे अर्जुन! कर युद्ध और सुमरन मेरा।
मुझमें अर्पित मन बुद्धि युक्त तू पायेगा मुझमें डेरा ॥

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥ ८ ॥

अभ्यास-योग से युक्त हुआ, करता जो थिर-चित से चिन्तन।
वह परम दिव्य-नर को पाता, जिसको करते सब देव, नमन ॥

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ९ ॥

सूक्ष्मातिसूक्ष्म सर्वज्ञ सहज, रहता जो तम से सदा परे।
जो इस अचिंत्य आदित्य वर्ण का, मनन और आध्यान करे ॥

प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ १० ॥

जो भृकुटि बीच रख प्राण, योग बल से उसको निहार पाता।
वह भक्ति युक्त नर अन्त समय, उस परम पुरुष को पा जाता ॥

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

कहते अक्षर वेदज्ञ जिसे, आसक्ति-रहित जिसमें जाते ।
कहता तेरे हित, उस पद को, हैं जिसे ब्रह्मचारी पाते ॥

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ १२ ॥

रोके, सब इन्द्रिय-द्वारों को, मन को उर में जो निश्चित कर।
सुस्थित हो योग धारणा कर, मस्तक में प्राण धरे जो नर ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥

एकाक्षर रूप ब्रह्म को जप, जो मेरा चिन्तन करता है ।
वह पुरुष परम गति पाता है, जो 'ओम्-ओम्' कह मरता है ॥

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥ १४ ॥

करता मेरा सुस्मरण सतत, अर्जुन ! उसको मैं नहीं अलभ ।
जो नित्य युक्त योगी उसको, तो मैं रहता हूँ सदा सुलभ ॥

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥ १५ ॥

जो परम सिद्धि को प्राप्त हुये, ऐसे महान जन, सुनो सभी ।
मुझको पाकर, होते न भक्त—वे पुनर्जन्म को प्राप्त कभी ॥

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १६ ॥

जन ब्रह्मलोक तक जाकर भी, फिर जन्म ग्रहण करते अर्जुन ।
पर, मुझे प्राप्त कर, पुनर्जन्म होता न कभी, उसका तू सुन ॥

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ १७ ॥

ब्रह्मा का है जो एक दिवस, उसमें सहस्र युग होते हैं ।
इतनी ही रात्रि जानते जो, वे अहोरात्रि-विद होते हैं ॥

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ १८ ॥

सम्पूर्ण भूतगण दिन में ही, ब्रह्मा के तन से होते हैं ।
वे सभी रात्रि आने पर ही, तत्क्षण उसमें फिर सोते हैं ॥

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


होकर उत्पन्न प्रकृति वश सब, उस निशि में लय हो जाता है।
यों ब्रह्मा निज शत वर्षों में, दूसरा प्रकट हो जाता है ॥
पुनरावर्ती होने से तो आब्रह्मलोक सब नश्वर हैं ।
है कालातीत बस ब्रह्म मात्र, सब और यहाँ क्षण भंगुर हैं ॥

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः ।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥ २० ॥

जो परे सर्वथा है उससे, अव्यक्त सनातन हे अर्जुन ।
सब भूत नष्ट होने पर भी, वह नष्ट नहीं होता, तू सुन ॥

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ २१ ॥

जो है अव्यक्त और अक्षर–बस, वही परम गति है ललाम ।
जिसको पा, आवागमन मिटे—वह ही है मेरा परम धाम ॥

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तः स्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥ २२ ॥

जिसमें सुस्थित हैं सभी भूत, जिससे यह सारा जगत व्याप्त ।
अव्यक्त-सनातन-परम पुरुष, है परम भक्ति से सदा प्राप्त ॥

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥ २३ ॥

जिस पथ पर चलकर योगीजन, तन-त्याग, लौट आते न यहाँ।
वह भी अर्जुन बतलाऊँगा—जिससे वे आते लौट यहाँ ॥

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥ २४ ॥

हैं शुक्ल मार्ग से जाते जो, षटमास उत्तरायण, नर-वर ।
वे ब्रह्म-विज्ञ-योगीजन ही, पा जाते–ब्रह्म, देह तजकर ॥

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥ २५ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


षटमास दक्षिणायन में जो, जाता सकाम योगी मर कर ।
शुभ कर्मों का फल भोग, स्वर्ग से आता-लौट, इसी भू पर ॥

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥ २६ ॥

हैं देवयान औ' पितृयान, यह मार्ग सनातन कहलाते ।
है शुक्ल मार्ग से अनावृत्ति, औ' कृष्ण मार्ग से दुख पाते ॥

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन ।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥ २७ ॥

इससे तू योग युक्त होकर, मुझको पाने का कर साधन ।
योगी न कभी मोहित होता, करके दोनों मत का पालन ॥

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥ २८ ॥

तप-दान-यज्ञ-अध्ययन-वेद में, कहा गया जो पुण्य तात ।
कर प्राप्त परम पद, वह योगी, तजता उसको ज्यों जीव-गात ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'अक्षर ब्रह्मयोग' नामक
आठवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १ ॥

है नहीं दोष-दर्शी अब तू, बोले अर्जुन से मधुसूदन ।
अति गोपनीय, भव दुख नाशक यह ज्ञान स्वस्थ चित करो श्रवण ॥

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥

सब विद्याओं का राजा यह, अत्युत्तम और पवित्र महा ।
है धर्मयुक्त अति गोपनीय अव्यय, साधन में सुगम अहा ॥

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥

इस तत्व ज्ञान को जो अर्जुन, श्रद्धा-विहीन धारण करते ।
वे मुझे न होकर प्राप्त, सदा संसार-चक्र में हैं भ्रमते ॥

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥

यह मुझसे सारा जगत व्याप्त, है मुझ में भूत सभी सुस्थित ।
यह सब मेरी इच्छा-वश हैं, पर मैं उनमें न कभी सुस्थित ॥

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः- ॥ ५ ॥

वे नहीं सभी मुझ में सुस्थित, तू देख प्रकृति का यह प्रभाव ।
कर्ता-धर्ता-पालक होकर, उनमें न तनिक मेरा लगाव ॥

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जैसे नभ से उत्पन्न वायु सुस्थित रहता है नभ में ही ।
वैसे ही यह सारे प्राणी सुस्थित मुझमें, गुन मन में ही ॥

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥

मेरी ही प्रकृति प्राप्त होते, कल्पान्त भूत अर्जुन सारे ।
फिर कल्प आदि में उन सबको रचता हूँ मैं कौतुक धारे ॥

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥

जो त्रिगुणमयी माया द्वारा अत्यन्त अवश हो जाते हैं ।
वे बार-बार निज कर्मों के अनुकूल देह, भव पाते हैं ॥

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥

हे अर्जुन ! यही सकाम-कर्म, जग के बन्धन बन जाते हैं ।
पर, उदासीन-आसक्ति-हीन मुझको, न बाँध वे पाते हैं ॥

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥ १० ॥

रचती यह मेरी माया ही, सचराचर सारा जगत सदा ।
उपरोक्त हेतु से होता है, इस जग में आवागमन सदा ॥

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥

मम परम भाव को जान न जो, हैं अज्ञ-मूढ़-मति अति विभ्रम ।
नर-तन रखने वाले मुझको, वे तुच्छ समझते हैं हरदम ॥

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥ १२ ॥

अज्ञानी वृथा ज्ञान वाले, वे वृथा कर्म नित करते हैं ।
मोघाशा, असुरों के स्वभाव को ही वे धारण करते हैं ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ १३ ॥

जो, दैवी-प्रकृति-आसरा ले—मुझको, भूतादि समझते हैं ।
वे ही अनन्य मन-युक्त हुये, मुझ अव्यय को नित भजते हैं ॥

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥ १४ ॥

दृढ़व्रती, मुझे पाने के हित—रहते हैं ध्यान-मग्न, अर्जुन ।
करके पूजा वे भक्ति-सहित, करते रहते मेरा कीर्तन ॥

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥

कुछ ज्ञान यज्ञ से पूज मुझे, एकत्व-भाव से भजते हैं ।
कुछ स्वामी-सेवक भाव मान, कुछ बहु-प्रकार से भजते हैं ॥

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥ १६ ॥

मैं श्रौत कर्म हूँ स्वधा यज्ञ, मैं मंत्र और औषधि मैं ही ।
मैं ही हूँ घृत, मैं अग्नि सदा, हे अर्जुन ! हवन-क्रिया मैं ही ॥

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥ १७ ॥

इस जग का धाता-मातु-पिता, मैं ज्ञेय पवित्र पितामह हूँ ।
मैं ओंकार, ऋग्वेद और हूँ सामवेद मैं ही यजु, हूँ ॥

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥ १८ ॥

गति, भर्ता, प्रभु, साक्षी, निवास, सबका मैं ही तो हूँ अर्जुन ।
सबका निधान, मैं प्रभव-प्रलय, सबका कारण मैं ही हूं सुन ॥

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मैं सूर्य रूप से तपता हूं, कर्षित कर–जल बरसाता मैं ।
मैं ही हूं अमृत और मृत्यु, सत-असत और सब कुछ ही मैं ॥

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते ।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥ २० ॥

त्रयभाँति सोमपायी नर जो, पापों से पूत हुये अर्जुन ।
वे पूज मुझे यज्ञों द्वारा चाहते सदा स्वर्गिक-जीवन ॥
वे अपने पुण्यों के फल से, सुरलोक आदि पा जाते हैं
फिर भोग अनेकों दिव्य भोग, पीछे से अति पछताते हैं ॥

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ २१ ॥

वे भोग महत् स्वर्गीय भोग, होने पर पुण्य क्षीण–रोते ।
क्षण भंगुर मृत्युलोक को पा, वे दिव्य-स्वर्ग-सुख हैं खोते ॥
वे फिर सकाम-कामीजन ही, भोगों के फल को पाकर के ।
आते हैं यहाँ अनेक बार, वे दिव्य स्वर्ग में जाकर के ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ २२ ॥

जो जन निष्काम भाव से ही, मुझको चिन्तन कर भजते हैं ।
करता मैं योग-क्षेम वहन उनका–वे निर्भय रहते हैं ॥

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥

श्रद्धा से युक्त सकामी जो, देवता अन्य पूजा करते ।
पूजते यदपि वे भी मुझको, पर जन विधि-हीन वहा करते ॥

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥ २४ ॥

सब यज्ञों का भोक्ता स्वामी मैं ही, यों नहीं जानते वे ।
इसलिये सदा ही अज्ञ-मूढ़ हैं पुनर्जन्म को पाते वे ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ २५ ॥

देवों के पूजक देवों को, पितरों को पितृव्रती पाते ।
भूतों के पूजक भूतों को, मम भक्त मुझे ही हैं पाते ॥

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥ २६ ॥

जल-पत्र-पुष्प-फल जो कुछ भी अपने भक्तों से पाता हूं ।
धर सगुण-रूप हे पार्थ ! उसे, अति प्रीति-सहित मैं खाता हूं ॥

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ २७ ॥

जो कुछ तू करता कर्म तथा जो कुछ भी खाता है, नर-वर ।
करता जो हवन, दान-तप तू वह सब मेरे ही अर्पण कर ॥

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥ २८ ॥

संन्यास-योग से युक्त, कर्म-बन्धन से तू छूट जायेगा ।
यों मुक्त हुआ उनसे, निश्चय तू मेरे को ही पायेगा ॥

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥ २९ ॥

मैं सब भूतों में सम-व्यापक, कोई न प्रियाप्रिय मेरा है ।
जो भक्त प्रेम से भजते वे मुझ में, उनमें हिय मेरा है ॥

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ ३० ॥

जो अधिक दुराचारी जन भी, नित केवल मुझको भजता है ।
निश्चित ही वह है साधु परम, जो एकमात्र सब तजता है ॥

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


तत्क्षण धर्मात्मा होकर वह शाश्वत-शान्ति प्राप्त करता ।
कौन्तेय ! जान तू मेरा जन, निश्चय ही कभी नहीं मरता ॥

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ ३२ ॥

शूद्रादिक वैश्य और नारी—पापी जो मुझको ध्याते हैं ।
वे भी मेरे आश्रित रहकर, गति परम सहज पा जाते हैं ॥

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥ ३३ ॥

भक्तों की क्या ? जब पापी भी, तर जाते शुभ गति को पाकर ।
भज, इससे तू केवल मुझको, यह सुर-दुर्लभ, नर-तन पाकर ॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ३४ ॥

मेरे मन वाला, हो सुभक्त जो मुझको नित्य प्रणाम करे ।
मुझमें कर लीन स्वयं को वह, निश्चय मेरा ही रूप धरे ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'राज विद्याराज गुह्य योग' नामक
नौवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# दशम अध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १ ॥

तू है अति प्रिय मम सखा भक्त, सुन चित्त-युक्त हो इसे, पार्थ ।
यह अति रहस्यमय परम वचन कहता हूँ मैं तेरे हितार्थ ॥

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ २ ॥

हैं नहीं जान पाते लीला, मेरी महर्षि सुरगण, अर्जुन ।
हूं क्योंकि आदि कारण इनका, सम्यक प्रकार से ले यह सुन ॥

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

विभु-लोक महेश्वर-अज-अनादि, जो ऐसा मुझे जानता है ।
वह ज्ञानवान सब पापों से, निश्चय विमुक्त हो जाता है ॥

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥ ४ ॥

हे अर्जुन ! बुद्धि-क्षमा-दम-शम, सुख-असंमोह दुख तथा प्रलय ।
उत्पत्ति-ज्ञान-भय सत्य तथा ऐसे ही क्रम से भाव अभय ॥

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ ५ ॥

तप-तुष्टि-अहिंसा हे अर्जुन ! यश-अयश आदि जो होते हैं ।
नाना प्रकार के भाव सभी, यह मुझसे ही तो होते हैं ॥

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


स्वायंभुव आदिक चौदह मनु—सप्तर्षि महा, सनकादि चार ।
मेरे मानस से प्रकट हुए फिर उनसे सारा जग अपार ॥

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥

जो जान विभूति योगं को नर, समझे मुझको सर्वत्र व्याप्त ।
वह ध्यान योग द्वारा सुस्थित, मुझको कर लेता शीघ्र प्राप्त ॥

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥ ८ ॥

मैं ही सब जग का प्रभव-हेतु, मुझसे ही जग चेष्टा करता।
यों जान तत्व से श्रद्धायुत, मुझको ही नित्य भजा करता ॥

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ ९ ॥

जो लगा प्राण मन नित मुझमें, मेरा गुण-गान किया करते ।
वे सहज तुष्ट रहकर, मुझमें नित ही लवलीन रहा करते ॥

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ १० ॥

जो प्रीति-सहित भजते मुझको, उन सतत युक्त भक्तों को, सुन ।
देता हूँ बुद्धि योग, जिससे वे पा लेते मुझको, अर्जुन ॥

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ ११ ॥

करने उन पर अनुकम्पा ही, निज आत्म-भाव सुस्थित होकर ।
हर लेता ज्ञान-दीप द्वारा, मैं उन सबका अज्ञान–तिमिर ॥

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादि देवमजं विभुम् ॥ १२ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


अर्जुन बोले परम धाम, देवादिदेव विभु-अज पावन ।
हो दिव्य-सनातन-पुरुष नित्य तुम ही भक्तों के मन-भावन ॥

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥ १३ ॥

देवल ऋषि, व्यास, असित कहते हैं नारदादि देवर्षि सभी ।
ऐसा ही कहते मेरे प्रति हे कृष्ण ! स्वयं हैं आप अभी ॥

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥ १४ ॥

जो कहा आपने मेरे प्रति, वह सभी सत्य है, हे गिरिधर ।
पर, जान न पाते देव-दनुज, इस लीला को, भगवत ! सत्वर ॥

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥

भूतेश ! भूतभावन, नर-वर, हे जग-पति हे देवादिदेव ।
कैसे जानें ? जब अपने से हो ज्ञेय स्वयं ही एकमेव ॥

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥ १६ ॥

जिन-जिन विभूतियों के द्वारा हैं व्याप्त आप, हे जगाधार ।
मैं उन्हें जानने का इच्छुक, कहिये उनको सम्यक् प्रकार ॥

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥ १७ ॥

मैं चिन्तन करता हुआ सदा, कैसे तुमको पहिचानूँ ।
कहिए, हे कृष्ण ! कृपा करके—किन-किन भावों से जानूँ ॥

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥ १८ ॥

निज योग शक्ति, अपनी विभूति, समझा कर कहिये गिरधारी ।
होती न तृप्ति, सुन अमिय-वचन, सुनने की उत्कंठा भारी ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १९ ॥

बोले श्रीकृष्ण यही मेरी हैं, सब विभूतियाँ अति अनन्त ।
अब बतलाऊँगा मैं तुमको, जो व्याप रही हैं दिग-दिगन्त ॥

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥ २० ॥

सब भूतों के उर में सुस्थित, आत्मा सबका मैं ही यथार्थ ।
हूँ सब भूतों का आदि-मध्य, मैं ही हूँ सब का अन्त, पार्थ ॥

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥ २१ ॥

आदित्य-गणों में विष्णु और ज्योतिर्मानों में दिनकर हूँ ।
मैं मरुतों बीच मरीचि और नक्षत्रों में मैं हिमकर हूँ ॥

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥ २२ ॥

वेदों में सामवेद मैं ही, हूँ इन्द्र सुरों में मैं यथार्थ ।
इन्द्रिय गण में मन जान मुझे, सब भूतों में चेतना, पार्थ ॥

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥

एकादश रुद्रों में शंकर, हूँ यक्ष-राक्षसों में कुबेर ।
वसुओं में हूँ पावक मैं ही, गिरि-मालाओं में हूँ सुमेर ॥

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥ २४ ॥

तू पुरोहितों में जान मुझे हे पार्थ, बृहस्पति अति महान् ।
सेनापतियों में त्यों स्कन्द, तू जलाशयों में सिंधु मान ॥

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ २५ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मैं ही महर्षियों में भृगु हूँ, सारे वचनों में ओंकार ।
जप यज्ञ सभी यज्ञों में हूँ, अचलों में हिमवान मान ॥

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥ २६ ॥

देवर्षि जनों में हूँ नारद, अश्वत्थ सभी वृक्षों में मैं ।
गन्धर्वों बीच चित्ररथ हूँ, सिद्धों में स्वयं कपिल हूँ मैं ॥

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥ २७ ॥

घोड़ों में उच्चश्रवा और, करियों में ऐरावत गजेन्द्र ।
हे अर्जुन ! सभी मनुष्यों में, मैं ही तो केवल हूं नरेन्द्र ॥

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥ २८ ॥

मैं शस्त्रों में हूं वज्र और, गायों में कामधेनु, अर्जुन ।
मैं हूं प्रजनन-हित कामदेव, सर्पों में हूं वासुकि, तू सुन ॥

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥ २९ ॥

मैं नागों में हूं शेषनाग, जलचरों बीच मैं वरुण सबल ।
हूं पितरों मध्यार्यमा, शासकों में मैं ही यमराज प्रबल ॥

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥ ३० ॥

मैं गणकों में हूं काल, और दैत्यों में हूं प्रह्लाद दिव्य ।
हूं गरुड़ पक्षियों में मैं ही, पशुओं में हूं मृगराज, भव्य ॥

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥ ३१ ॥

मैं पवन वेगवानों में हूं, नदियों में सुरसरि हूं ललाम ।
मैं मकर, मछलियों में, एवं हूं शस्त्र-धारियों मध्य राम ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥

हे अर्जुन ! सभी सृष्टियों का, मैं आदि-अन्त औ' मध्य, अहा ।
मैं वाद, विवादकारियों में, विद्याओं में आध्यात्म महा ॥

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥

मैं द्वन्द्व, समासों में, समास—हूं वर्णों में अर्जुन अकार ।
मैं अक्षय काल, विश्वतोमुख, मैं ही सबका धाता उदार ॥

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥ ३४ ॥

मैं ही नारी में कीर्ति-वाक्-स्मृति-मेधा धृति रमा क्षमा ।
भावी उद्भव का कारण मैं, हूं मृत्यु तथा सर्वत्र रमा ॥

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥ ३५ ॥

छन्दों में गायत्री महान्, मैं श्रुतियों में हूं बृहत्साम ।
मासों में मार्गशीर्ष मैं ही, ऋतुओं में कुसमाकर ललाम ॥

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥ ३६ ॥

छल-कर्ताओं में द्यूत, विजेताओं में हूँ मैं विजय-भाव ।
हूँ तेज, तपस्वी का, निश्चय व्यवसायी का, सत सत्व-भाव ॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ ३७ ॥

हूँ कृष्ण वृष्णियों में मैं ही, पाण्डव लोगों में मैं अर्जुन ।
मुनियों में वेद व्यास और, कवियों में शुक्राचार्य, सुजन ॥

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मैं दण्ड, दमन-कर्ताओं का, मैं ही विजयी की नीति–नवल ।
मैं मौन गोप्य भावों में हूँ, ज्ञानी में तत्वज्ञान निर्मल ॥

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ ३९ ॥

मैं सब भूतों का बीज स्वयं, चर और अचर में सदा व्याप्त ।
कोई भी मुझसे रहित नहीं, कर निश्चय, होगा मुझे प्राप्त ॥

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ ४० ॥

हैं यह विभूतियाँ दिव्य सभी, इनका है अन्त नहीं, अर्जुन ।
फिर भी संक्षिप्त रूप से यह तू समझ, किया है जो वर्णन ॥

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥ ४१ ॥

जो-जो भी वस्तु विभूति-युक्त, है शक्ति-युक्त जग में सुन्दर ।
उन-उन में मेरा तेज-अंश, ही व्याप रहा है, निश्चय कर ॥

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ॥
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥ ४२ ॥

है अंशमात्र से सभी जगत, सुस्थित मुझमें, हे निर्विकार ।
मैं ही तो हूँ सर्वत्र व्याप्त, बस–एकमात्र है यही सार ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'विभूति योग' नामक
दशवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# एकादश अध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥

बोले अर्जुन की कृपा बहुत, अति गोपनीय वचनों द्वारा ।
जिसको सुनकर हो गया नष्ट अज्ञान, नाथ ! मेरा सारा ॥

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ २ ॥

सुन चुका पूर्ण विस्तार सहित, मैं प्रभव-प्रलय की कथा, नाथ ।
कमल-नयन, हे अज-अव्यय ! कर कृपा कीजिए अब सनाथ ॥

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥

अपने को कहते हो जैसा, वैसा निश्चय ही सत्य सभी ।
चाहता देखना मैं फिर भी, ऐश्वर्य-रूप प्रत्यक्ष अभी ॥

मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥

यदि विश्व-रूप मेरे द्वारा, देखा जाना हो शक्य प्रभो ।
वह अविनाशी-अव्यय-स्वरूप, तो दिखा दीजिए शीघ्र विभो ॥

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥

सुन, अर्जुन की विनीत विनती, भगवान कृष्ण बोले-हँसकर ।
नानाकृति वर्णों वाला यह, तू देख रूप मेरा मनहर ॥

पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


द्वादश आदित्य, आठ वसु औ', उनचास मरुद्गण देख पार्थ ।
अश्विनी युगुल, आश्चर्ययुक्त वह दिव्य-रूप मुझमें, यथार्थ ॥

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥

हे गुडाकेश ! मेरे तन में, एकस्थ चराचर-जगत देख ।
जो और देखना चाहे तू, वह दिव्य अलौकिक सभी देख ॥

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥ ८ ॥

अपने इन प्राकृत नेत्रों से, तू देख न सकता यह स्वरूप ।
देता हूं दिव्य-चक्षु जिससे, तू देख सके मेरा स्वरूप ॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः ।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥

संजय बोले—ऐसा कहकर, राजन् ! उन योगेश्वर हरि ने ।
दिखलाया अपना दिव्य-रूप, ऐश्वर्ययुक्त नर-केहरि ने ॥

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥

बहु मुख नेत्रों से युक्त, अनेकों दिव्याभरण किये धारण ।
अद्भुत-दर्शन वाले, हाथों में किये हुये आयुध-धारण ॥

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥

वे दिव्य-गंध से युक्त, किये थे दिव्य वसन, माला धारण ।
देखा साश्चर्य विश्वतोमुख, अर्जुन ने—जो जग का कारण ॥

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥ १२ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


नभ में सहस्र रवि एक साथ, हो उदित—करें जितना प्रकाश।
वह विश्व-रूप की समता में, था जुगनूवत राजन् ! प्रकाश ॥

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥ १३ ॥

बहु विधि से होकर के विभक्त, तत्क्षण अर्जुन ने यों देखा ।
देवादिदेव के तन में ही, एकस्थ हुआ सब जग देखा ॥

ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥ १४ ॥

आश्चर्ययुक्त, रोमोंवाला, उसका शरीर सारा डोला ।
सिर से प्रणाम कर, जोड़ हाथ-लख, विश्व रूप वह यों बोला ॥

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ १५ ॥

हे कृष्ण ! आपके तन में तो, हैं देव, सभी प्राणी सु-स्थित ।
विधि, महादेव, ऋषिगण सारे, हैं दिव्य-सर्प भी तो सुस्थित ॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥ १६ ॥

हैं आप अनेक भुजाधारी, बहु उदर और बहु मुख वाले ।
बहु नेत्रयुक्त, मैं देख रहा—हैं आप अनन्त-रूप वाले ॥
है नहीं आपका कहीं आदि, दिखलाता मुझे न अन्त कहीं ।
हे विश्वेश्वर ! हे विश्वरूप !! है कहीं आपका मध्य नहीं ॥

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥

माथे पर भव्य किरीट लगा, है एक हाथ में चक्र दिव्य ।
हैं सभी ओर से ज्योतिर्मय, तेजोमय अतिशय नाथ, भव्य ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


प्रज्वलित अग्नि-रवि के सदृश, हे प्रभावान तुम हो अव्यय ।
हे दुर्निरीक्ष्य ! हे अप्रमेय !! तुम ही अनादि अज हो अक्षय ॥

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥ १८ ॥

हैं सदा आप ही ज्ञेय परम, अविनाशी-अक्षर जगाधार ।
इस जग के परमाश्रय-त्राता, हे विश्वंभर अव्यय उदार ॥
हैं आप अनादि, धर्म-रक्षक ! हैं आप सनातन-पुरुष हरे ।
हैं गुणातीत—यह मेरा मत, हैं आप प्रकृति से सदा परे ॥

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् । १९ ॥

हैं आप सदा ही आदि-रहित, हे जगदीश्वर, हे परमेश्वर ।
हैं मध्य-अन्त से आप परे, हे भूतेश्वर, हे कालेश्वर ॥
हैं आप अनन्त-बाहु वाले, शशि-सूर्य-रूप नयनों वाले ।
देखता विश्व को तप्त हुआ, प्रज्वलित अग्नि-मय मुख वाले ॥

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥ २० ॥

यह स्वर्ग-धरिणि के अन्तर का, सारा नभ सभी दिशा में यह ।
हैं एक आप से व्याप्त सभी परिपूर्ण प्रभामय सारी यह ॥
यह उग्र-अलौकिक रूप देख, त्रैलोक्य प्रकंपित होता है ।
प्रभु देख आपका विश्व रूप, मम धैर्य धीरता खोता है ॥

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ।२१।

यह सभी सुरों के संघ, आप में ही प्रविष्ट होते जाते ।
होकर तदात्म, मानों अपना अस्तित्व सभी खोते जाते ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


कोई भयभीत हुये, कोई कर-बद्ध किये, गाते जाते।
ऋषि-सिद्ध-संघ कर—स्वस्ति वाद, वर-स्तुस्तियाँ करते जाते॥

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे॥ २२॥

एकादश रुद्र, तथा द्वादश आदित्य, आठ वसु विश्व-देव।
अश्विनि-कुमार औ' पितर संघ, गण साध्य तथा श्री पवनदेव॥
गंधर्व-यक्ष-राक्षस एवं सिद्धों के भी समुदाय सभी।
विस्मित हो देख रहे सब ही, जैसे देखा हो नहीं कभी॥

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्॥ २३॥

हे महाबाहु! लखकर बहु मुख, बहु नेत्र तथा बहु हाथ-चरण।
बहु जंघा और उदर वाले हैं आप, लीजिए मुझे शरण॥
यह देख भयंकर रूप नाथ, हो रहे लोक भी व्यथित सभी।
मैं अति व्याकुल-भयभीत, कृष्ण! कीजे प्रबोध-कर क्षमा अभी॥

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो। २४॥

हे विष्णु! नभस्पर्शी प्रदीप्त, हो बहु रूपों से युक्त-भव्य।
फैलाये, भारी मुखवाले, ज्योतिर्मय नयन सुरम्य—दिव्य॥
इस भाँति आप को देख नाथ मैं भीत-हृदय हूँ अति अधीर।
कीजे अब कृपा—वरद-कर रख, जिससे अब मैं रख सकूँ धीर॥

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥ २५॥

लखकर विकराल सुदृढ़ डाढ़ें, दिग्भ्रमित हुआ जाता हूं मैं।
मुख देख, प्रलय की अग्नि-सदृश भय-मथित हुआ जाता हूं मैं॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


होऊँ चिर सुख को प्राप्त, सदय ! व्यापे न कभी भव-दुख प्रभुवर।
देवादिदेव, हे जग निवास ! अब हों मुझ पर प्रसन्न सत्वर ॥

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥ २६ ॥

धृतराष्ट्र-पुत्र आदिक समेत, जितने यह नृपति कहाते हैं।
मैं देख रहा-वे सभी, आपके मुख में क्रमशः जाते है॥
गुरु द्रोण-भीष्म सह सूत पुत्र, हैं दन्त-मध्य कुछ लटके से।
कुछ प्रमुख-प्रमुख मेरे योधा, दिख रहे अटकते-भटके-से ॥

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ २७ ॥

लगता है जैसे यह सब ही, स्वयमेव दौड़ते आते हैं।
दोनों डाढ़ों के बीच, मुखों में कुछ प्रवेश पा जाते हैं॥
हो नष्ट-भ्रष्ट निज अंगों से, कुछ ऐसे दिखलाई देते।
दाँतों के बीच लगे वे सब, राई दिखलाई देते ॥

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥ २८ ॥

जैसे नदियाँ, बहु जल-प्रवाह सागर की ओर बढ़ा करते।
वैसे ही शूर-वीर सबही, हैं स्वतः जारहे यह बढ़ते॥

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥

प्रज्वलित अग्नि में ज्यों पतंग, अत्यधिक वेग से आते हैं।
फिर होकर रूप-मुग्ध उस पर, वे हँस-हँस कर जल जाते हैं॥
वैसे ही अपने नाश-हेतु यह लोग स्वयं चलते आते।
फिर द्रुत-गति से तव-मुख में ही, वे सब प्रवेश पाते जाते॥

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥ ३० ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


लगता जैसे सब लोकों को, कर रहे ग्रसित हैं आप स्वयं ।
कर रहे तप्त सारे जग को, करके प्रकाश अति उग्र परम ॥

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥

उग्ररूप धारी महान् ! हे देव श्रेष्ठ हैं कौन आप ?
निःसीम-सगुण नर-तनु धारी है, सका आपको कौन माप ॥
मैं नहीं जानता तव-प्रवृत्ति, इससे मुझको अपना लीजै ।
कर ग्रहण, प्रेम से नमस्कार, होकर प्रसन्न प्रभु वर दीज ॥

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ ३२ ॥

इस भाँति पूछने पर-हरि ने अर्जुन से कहा—मुदित होकर ।
मैं महाकाल हूँ बढ़ा हुआ, समझ अहं अपना खोकर ॥
जो-जो अधर्म का आश्रय ले, कौरव-सेना में सुस्थित है ।
तू विमुख रहे रण से तो भी, उन सबका नाश सुनिश्चित है ॥

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् ।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥

इससे उठ तू, रिपु-दल सँहार, कर प्राप्त विजय-सम्मानपूर्ण ।
फिर भोग राज्य यह निष्कंटक, सुखकर एवं, धन-धान्य-पूर्ण ॥
पहले ही इन सब वीरों को, मैं मार चुका हूँ हे अर्जुन ।
तू आगे बढ़—युद्धार्थ, मात्र होजा निमित्त—मेरा मत सुन ॥

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् ।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥ ३४ ॥

गुरु द्रोण, पितामह भीष्म, कर्ण, जयद्रथ महान योधागण भी ।
हैं मार दिये मैंने पहले, इससे करना मत शोक कभी ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


इन मरे हुये योधाओं को, तू मार—तनिक भी भय मतकर।
जीतेगा रिपुओं को निश्चय, कर युद्ध—स्वस्थ, चेतन होकर ॥

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥

सुन केशव के वचनों को यों बोला किरीटधारी अर्जुन।
कर बद्ध किये, पुलकित शरीर, गद्गद-वाणी जल भरे नयन ॥
क्या करूँ और क्या नहीं? नाथ! यह भी कुछ नहीं समझ पाता।
करता प्रणाम, दो शरण मुझे, यों तो अब रहा नहीं जाता ॥

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ ३६ ॥

हे अन्तर्यामी! कर कीर्तन हो रहा जगत सारा हर्षित।
राक्षस जा रहे दिशाओं में, भागे सभीत हो अधिक व्यथित ॥
मिल सभी सिद्धगण प्रमुदित हो, करते प्रणाम हैं बार-बार।
हे नाथ! करो मेरी रक्षा, हे करुणाकर! हे जगाधार ॥

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकत्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्पर यत् ॥ ३७ ॥

हो तुम्हीं आदि कर्ता विधि के, देवादिदेव हे सर्व श्रेष्ठ।
फिर क्यों न करें सुर मिलकर सब, अर्चन-वन्दन तव यों यथेष्ट ॥
हे जगनिवास-देवेश प्रभो, विभु-अज-व्यापक तुम हो अनन्त।
सत और असत से परे तुम्हीं, सच्चिदानन्द अक्षर अनन्त ॥

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥ ३८ ॥

हे पुरुष सनातन आदिदेव, सारे जग के परमाश्रय तुम।
सर्वज्ञ, सभी के ध्येय—पूज्य, हो वेद्य और करुणालय तुम ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


तुम हो अनन्त, तुम परमधाम, तुम ही सब जग से न्यारे हो।
तुमसे यह सारा जगत व्याप्त, तुमही तो नन्द-दुलारे हो॥

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥ ३९॥

तुम अग्नि और यमराज वरुण, हो वायु-शशांक परम ईश्वर।
तुम ही ब्रह्मा, ब्रह्मा के पितु, तुम ही अविनाशी जगदीश्वर॥
अखिलेश सुरेश रमेश तुम्हीं, हे विश्वरूप, हे जगाधार।
है नमस्कार फिर नमस्कार, हे विश्वंभर! शत नमस्कार॥

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥ ४०॥

है नमः तुम्हें सामर्थ्यवान, आगे से पीछे से भगवन।
हे सर्वात्मन! फिर-फिर प्रणाम, सर्वतः तुम्हें हे दुख-भंजन॥
हो अमित-पराक्रमशाली तुम, हे सर्वव्याप्त कंसारि हरे।
हे सर्वरूप! हे सर्वात्मन!! हो तुम्हीं त्रिगुण से सदा परे॥

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥ ४१॥

चाहे वह कहा प्रेम वश ही, अथवा प्रमाद वश या भय से।
हे कृष्ण! सखा! हे माधव! जो,हठपूर्वक निकल गया मुझसे॥
महिमा न जानते हुये देव, जो कहा कभी मैंने अनुचित।
कीजे बस क्षमा, उसे प्रभुवर! लीजे अपना जिससे हो हित॥

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥ ४२॥

हे अच्युत! तुम्हें हँसाने को, जो कर्म हुये मेरे द्वारा।
एकाकी, मित्रों के समक्ष, जाने-अनजाने हठ-द्वारा॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


शय्या-विहार-भोजन करते, हो किया अगर अपराध कभी।
हे अप्रमेय ! वे तो मेरे, हैं क्षम्य, नाथ अपराध सभी॥

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥ ४३॥

हो पिता चराचर इस जग के, हो तुम्हीं सभी से अति महान्।
हो गुरु तुमही, गुरु से बढ़कर, अति पूजनीय सामर्थ्यवान॥
तीनों लोकों में हे भगवन ! है क्या कोई ऐसा महान।
हो कैसे तुमसे श्रेष्ठ और कोई भी, हे गुण के निधान॥

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥ ४४॥

इसलिए कृष्ण हे वंदनीय ! सिर को पद-पद्मों में रखकर।
करता प्रणाम, हों मुदित आज, हे दीनबन्धु ! हे जगदीश्वर॥
सुत के ज्यों पिता, प्रिया के पति-कर देता है अपराध क्षमा।
ज्यों सखा सखा के, वैसे ही करदें मेरे अपराध क्षमा॥

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास॥ ४५॥

ऐसा स्वरूप तो हे भगवन् ! पहिले देखा था नहीं कभी।
हर्षित हूं इसे देखकर के, पर मन है भय से विकल अभी॥
जो दिखलाया था प्रथम रूप, उसका ही शुभ दर्शन दीजै।
हे जग-निवास ! होकर प्रसन्न, अब तो मुझको अपना लीजे॥

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते॥ ४६॥

हो सिर पर मुकुट, चक्र कर में, वह भव्य गदा धारण कर फिर।
हे नाथ ? चतुर्भुज-रूप पुनः दिखला दें वैसा ही सुन्दर॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मैं दास आपका हूँ केवल कुछ तो अब कृपा-कोर कीजै ।
हे सहसबाहु ! हे विश्वमूर्ति !! अब तो मुझको अपना लीजै ॥

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् ।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥

विनती सुनकर यों अर्जुन की, बोले योगेश्वर—सुनो, पार्थ ।
निज योगशक्ति से दिखलाया, कर कृपा रूप अपना यथार्थ ॥
है अति विराट् तेजोमय यह, मेरा सुन्दर निःसीम रूप ।
देखा न किसी ने तुझे छोड़, अब तक ऐसा अनुपम स्वरूप ॥

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥

मैं नहीं वेद से, यज्ञों से, अथवा अध्ययन शक्य अर्जुन ।
तप-उग्र-क्रियाओं द्वारा भी, मैं दिखता नहीं कभी तू सुन ॥
है कौन ? विराट्-रूप देखे, मेरा जो अर्जुन, इस प्रकार ।
है देख न सकता तुझे छोड़, कोई भी—यह मेरा विचार ॥

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥ ४९ ॥

विकराल रूप यह मेरा लख, हो मत विमूढ़ तू कुरु-प्रवीर ।
साहस कर रख धीरज इस क्षण, हे वीर ! न हो इतना अधीर ॥
भय-रहित, प्रीतियुत मन वाला, होकर वह पहिला रूप पेख ।
तू भक्त हमारा है इससे, यह सौम्य चतुर्भुज-रूप देख ॥

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।
आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ ५० ॥

यों कहकर, रूप चतुर्भुज फिर अर्जुन को प्रभु ने दिखलाया ।
लख, सौम्य-शान्त-प्रमुदित-स्वरूप, उसने खोया धीरज पाया ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥ ५१ ॥

बोला अर्जुन अति शान्त और प्रभु का सुन्दर नर-तन लखकर ।
मैं शान्त-चित्त हो गया नाथ ! अपने स्वभाव को फिर पाकर ॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ ५२ ॥

सुनकर अर्जुन के वचनों को, भगवान कृष्ण तब यों बोले ।
यह रूप चतुर्भुज अति दुर्लभ, जो है देखा तूने भोले ॥
पाते न कभी योगी मुनि भी, जो जप-तप करते रहते हैं ।
इसका दर्शन करने को तो, सब देव तरसते रहते हैं ॥

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥

दिखता न यज्ञ-तप करने से, मैं दान-वेद से नहीं कभी ।
देखा जो तूने रूप, उसे लख पाते नर हैं नहीं कभी ॥

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥ ५४ ॥

हे पार्थ ! अनन्य भक्ति करके, पा सकते मुझको सभी यहाँ ।
यों ज्ञेय, प्राप्त प्रत्यक्ष स्वयं, हूँ एक तत्व से सदा यहाँ ॥

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥

निर्वैर सदा भूतों में जो, आसक्ति-रहित मेरा जन है ।
मत्कर्म-परायण भक्त सदा, पाता जिसका मुझमें मन है ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'विश्वरूप दर्शन योग' नामक
ग्यारहवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ १ ॥

सुन इस प्रकार प्रभु वचनों को, अर्जुन बोले–हे गिरिधारी ।
हैं कौन उपासक श्रेष्ठ ? कहो-निर्गुण या सगुण, ध्यान धारी ॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ २ ॥

बोले श्रीकृष्ण सदा मुझको–भजते रहते जो तनुधारी ।
श्रद्धा से युक्त वही सेवक, हैं श्रेष्ठ, मुझे प्रिय-धनुधारी ॥

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ३ ॥

वश में कर जो इन्द्रिय-समूह, करते रहते मेरा चिन्तन ।
अव्यक्त-अचल-अविनाशी का, सर्वत्र सतत दर्शन-वन्दन ॥

संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ ४ ॥

वे भी पा लेते सहज मुझे, पर-हित में रत, जो सदा यहाँ ।
हे पार्थ, वही सच्चे योगी, मिलते हैं ऐसे सदा कहाँ ॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥

है क्लेश अधिक उनको प्रियवर,-अव्यक्त-निरत, जिनका उर है ।
अति क्लिष्ट, अगम-निर्गुण-साधन, जिनको यह तन-मन धन, वर है ॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सम्पूर्ण कर्म जो कर अर्पित, मुझको भजते हैं रात-दिवस ।
ऐसे सगुणोपासक मेरे—आराध्य, सदा मैं उनके वश ॥

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥

हे पार्थ, स्वयं बन उद्धारक मैं उसको अपना लेता हूँ ।
फिर शीघ्र अगम-भव-सागर से, उनकी नैया को खेता हूँ ॥

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥ ८ ॥

तू लगा प्रथम अपने मन को, केवल मुझमें, अन्यत्र नहीं ।
कर बुद्धि समर्पित पुनः मुझे, पायेगा, संशय नहीं कहीं ॥

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥ ९ ॥

तू अगर समझता है, अर्जुन, मन को वश में करना दुर्लभ ।
कर फिर अभ्यास योग का तू, जिससे होऊँगा तुझे सुलभ ॥

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥

अभ्यास नहीं यदि सरल, पार्थ ! मत्कर्म-परायण तू—हो जा ।
पा लेगा सहज कर्म करते, सर्वस्व अहं अपना खो जा ॥

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥ ११ ॥

यदि इसमें भी असमर्थ, जीत मन, मोह तोड़ देना होगा ।
शरणागत बन, सब कर्मों का फल, सहज छोड़ देना होगा ॥

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥

बिन जाने ही अभ्यास-मर्म, श्रेयस्कर है सदज्ञान यहाँ ।
है सदा ज्ञान से श्रेष्ठ ध्यान, इसकी ही महिमा पुण्य यहाँ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


पर, इससे भी बढ़कर जग में है श्रेष्ठ, कर्म-फल-त्याग, वीर ।
बस, इसी त्याग से मिलती है, द्रुत परम शान्ति सच्ची, सुधीर ॥

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ १३ ॥

जो द्वेष-भाव से रहित, सदा सारे भूतों पर करे दया ।
सम दुख-सुख में, निर्मम रहता, औ' जिसका मद हो चला गया ॥

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १४ ॥

सन्तुष्ट सतत, सम लाभ-हानि, योगी दृढ़ निश्चय धारा है ।
अर्पित की जिसने मनोबुद्धि, वह भक्त मुझे अति प्यारा है ॥

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ १५ ॥

पा सके न जिससे कोई दुख, उद्वेग नहीं व्यापे जिसको ।
भय-हर्ष, अमर्ष रहित है जो, हे पार्थ! वही है प्रिय मुझको ॥

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १६ ॥

जो आकाँक्षा से रहित, शुद्ध दुख-मुक्त, दक्ष है उदासीन।
वह आरंभों का त्यागी है, सच मुझको प्रिय,ज्यों सुधा भी न ॥

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥ १७ ॥

जो हो न कभी हर्षित न व्यथित, जो शोक-द्वेष इच्छा न करे ।
शुभ और अशुभ का परित्यागी, है भक्त मुझे प्रिय वही, अरे ॥

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥ १८ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जिसको समान है शत्रु-मित्र, मानापमान सम लगता है ।
शीतोष्ण दुःख-सुख है समान, आसक्ति-हीन जो रहता है ॥

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥ १९ ॥

निन्दा-सुस्तुति है तुल्य जिसे, जो मनन शील, सन्तुष्ट सदा ।
सुस्थिर मति जो अनिकेत, भक्त हे पार्थ ! मुझे प्रिय वही सदा ॥

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥ २० ॥

जो होकर एकमात्र मेरे, इस धर्म-सुधा को पीते हैं ।
श्रद्धालु, भक्त अति प्रिय मुझको, वे अजर-अमर हो जीते हैं ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'भक्ति योग' नामक
बारहवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# त्रयोदश अध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥ १ ॥

यों कहा कृष्ण ने कौन्तेय ! यह तन ही क्षेत्र कहा जाता ।
क्षेत्रज्ञ उसे कहते ज्ञानी, जो पहिले इसे जान जाता ॥

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ २ ॥

तू जान अरे सब क्षेत्रों में, क्षेत्रज्ञ स्वयं मुझको अर्जुन ।
क्षेत्रज्ञ-क्षेत्र का विश्लेषण, है ज्ञान, यही मेरा मत सुन ॥

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् ।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ ३ ॥

जो है, जैसा है क्षेत्र जहाँ, कहते विकारयुत हैं जिसको ।
वैसे ही है क्षेत्रज्ञ, जिसे-संक्षिप्त सुनाता हूं तुमको ॥

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् ।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥

ऋषियों द्वारा वेदों द्वारा-जैसा है कहा गया अभिमत ।
वह ब्रह्मसूत्र के दिव्य पदों में युक्तियुक्त त्यों ही, निश्चित ॥

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥ ५ ॥

मन-बुद्धि-प्रकृति सब महाभूत, हे पार्थ ! और इन्द्रियाँ सभी ।
फिर शब्द-रूप-सुस्पर्श-गंध एवं रस पाँचों विषय सभी ॥

इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सुख-दुख-इच्छा-धृति-द्वेष और प्रस्थूल-देह का पिंड पार्थ।
चेतनता सहित क्षेत्र का यह, संक्षिप्त रूप ही है, यथार्थ ॥

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥

श्रद्धायुत हो गुरु की सेवा, अभिमान-दंभ का कर अभाव।
आर्जव-थिरता अरु शौच-अहिंसा-आत्म-विनिग्रह-क्षमाभाव ॥

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधि दुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥

इन्द्रिय-विषयों का त्याग तथा मद को नित दूर किये रहना।
फिर जीवन-जरा-मरण-रुज में दुख-दोषों का विचार करना ॥

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥

धन आदि पुत्र दारा में भी आसक्ति-रहित निर्मम रहना।
प्रिय अप्रिय के मिलने पर भी, हे अर्जुन! चित्त सुसम रहना॥

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ १० ॥

विषयासक्तों से उदासीन, शुचि निर्जन-देश-मध्य रहना।
अविचल-भक्ति के द्वारा ही हो योग-युक्त चिन्तन करना ॥

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥

आध्यात्म और जो तत्वज्ञान द्वारा सर्वत्र मुझे पाता।
है ज्ञान, अन्यथा जो इससे—अज्ञान वही है कहलाता ॥

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १२ ॥

जो ज्ञेय, जानकर के जिसको आनन्द प्राप्त हो जाता है।
वह आदि-रहित है परम ब्रह्म, वह सत् न असत कहलाता है ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १३ ॥

सर्वतः हाथ पैरों वाला, बहु नेत्र तथा मुख सिर वाला ।
सुस्थित, सब जगत व्याप्त करके, जो है सर्वतः श्रोत्र वाला ॥

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥ १४ ॥

सर्वेन्द्रिय गुणाभास जिसमें, जो सभी इन्द्रियों से विरहित ।
गुणभोक्ता औ' धारक-पोषक, वह ही निर्गुण आसक्ति-रहित ॥

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥ १५ ॥

सब भूतों के भीतर-बाहर, चर-अचर रूप में जो सुस्थित ।
अति सूक्ष्म, इसी से अविज्ञेय-वह दूर पास में भी सुस्थित ॥

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥ १६ ॥

अविभक्त हुआ सब भूतों में, भी वह विभक्त है, हे अर्जुन ।
संहारक, ज्ञेय तथा पालक, सबका उत्पादक वह ही सुन ॥

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥ १७ ॥

वह ब्रह्मज्योतियों की सुज्योति, इस माया से है सदा परे ।
सबमें सुस्थित है ज्ञान-रूप, है ज्ञान-गम्य वह ज्ञेय, अरे ॥

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥ १८ ॥

यों क्षेत्र, ज्ञान, है ज्ञेय, पार्थ ! दुर्लभ भी सुलभ कहा जाता ।
इसे तत्व से जान भक्त, मेरा स्वरूप है पा जाता ॥

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हैं प्रकृति-पुरुष दोनों अनादि, ऐसा कुरु-नन्दन ! सत्य जान ।
हैं त्रिगुण, विकार-प्रकृति-संभव, तू समझ इन्हें, निज हृदय मान ॥

कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥ २० ॥

है प्रकृति यही निश्चय पूर्वक, इस कार्य-करण का प्रभव हेतु ।
सुख-दुःखों के भोक्तापन में, है जीवात्मा यह सदा हेतु ॥

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥

रहकर के नित्य प्रकृति में ही, भोगता मनुज है त्रिगुण भोग ।
सत्-असत-योनियों का कारण, है निश्चय कर यह त्रिगुण-योग ॥

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥ २२ ॥

इस तन में सुस्थित हुआ पुरुष, परमात्मा कहलाता यथार्थ ।
उपद्रष्टा-अनुमंता-भर्ता, भोक्ता सर्वेश्वर वही, पार्थ ॥

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥ २३ ॥

यों प्रकृति-पुरुष को गुणों सहित, जो मनुज तत्व से गायेगा ।
सर्वथा वर्तता हुआ, भला वह पुनर्जन्म क्यों पायेगा ॥

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ २४ ॥

कुछ ध्यान मग्न, निर्मल मति हो, निज उर में प्रभु को लाते हैं ।
कुछ ज्ञानी सांख्य योग द्वारा, कुछ कर्म योग से पाते हैं ॥

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥

औरों से सुन अनजाने ही जो श्रद्धा-सहित मुझे भजते ।
वे श्रवण-परायण भी निश्चय, इस भव-सागर से हैं तरते ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥ २६ ॥

है यावन्मात्र यहाँ जो भी, चर-अचर वस्तु देखो अर्जुन ।
संयोग, क्षेत्र क्षेत्रज्ञ जान, उन सब का ही उद्भव-कारण ॥

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्ववविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥ २७ ॥

जो इन सब नश्वर-भूतों में, उस नाश-रहित परमेश्वर को ।
समता से सदा देखता है, बस वही देखता है उसको ॥

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥ २८ ॥

सर्वत्र समान भाव से वह, सब में ही प्रभु को पाता है ।
नश्वर तन, आत्मा मान अमर, वह श्रेष्ठ परम गति पाता है ॥

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥ २९ ॥

करती है प्रकृति कर्म सारे, है आत्मा नित्य अकर्ता ही ।
ऐसे जो सदा देखता है, वास्तव में लखता मनुज वही ॥

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥ ३० ॥

भिन्नता प्राणियों की जन जब, एकस्थ ईश में पाता है ।
संकल्प-मात्र से सृष्टि जान, वह प्रभु में लय हो जाता है ॥

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ ३१ ॥

है गुणातीत, है यह अनादि, तन में रहते भी है अव्यय ।
निर्लिप्त अकर्ता सदा यही, परमात्मा नित है अज-अक्षय ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ ३२ ॥

सर्वत्र व्याप्त होकर ज्यों नभ, निर्लिप्त, सूक्ष्म होने से ही ।
त्यों ही रहकर आत्मा तन में, होता न गुणों से लिप्त कभी ॥

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥ ३३ ॥

ज्यों एक सूर्य ही पूर्ण लोक, आलोकित कर देता अर्जुन ।
त्यों ही क्षेत्री सम्पूर्ण क्षेत्र, आलोकित कर देता है सुन ॥

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥ ३४ ॥

जो क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ-भेद, हैं ज्ञान-नेत्र से जान गये ।
वे भूत प्रकृति से मुक्त हुये, प्रभु को सचमुच पहिचान गये ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग' नामक
तेरहवाँ अध्याय समाप्त ।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# चतुर्दश अध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ॥ १ ॥

जो है ज्ञानों में सर्व श्रेष्ठ, वह ज्ञान बताऊँगा अर्जुन ।
जिसको कि जानकर प्राप्त हुये, हैं परमसिद्धि को सब मुनि-जन॥

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ २ ॥

मेरे स्वरूप को प्राप्त हुये, जो इसका आश्रय लेते हैं ।
वे पुनर्जन्म से मुक्त, प्रलय में किंचित दुखी न होते हैं ॥

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥

है महत ब्रह्म मम योनि पार्थ ! जिसमें थापित कर बीच अलभ ।
होती जड़-चेतन मिलने से, सब भूतों की उत्पत्ति सुलभ ॥

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥

हे अर्जुन ! सभी योनियों में, संभव होते जितने शरीर ।
उन सबकी तो माया जननी, मैं स्वयं बीज-प्रद पिता-वीर ॥

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥

सत-रज-तम यह तीनों गुण भी तो,उत्पन्न प्रकृति से होते हैं ।
इस अव्यय आत्मा को तन में, दृढ़ बाँध स्वयं वे सोते हैं ॥

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


है सत्व, प्रकाशक निर्विकार, उन तीनों में हे पार्थ ! सुनो ।
सुख और ज्ञान से कहता है, जो बद्ध स्वयं ही, इसे गुनो ॥

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम्
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥ ७ ॥

तृष्णा से राग-रूप यह ही उत्पन्न रजोगुण तुम जानो ।
जो फलासक्ति कर्मों में है, बाँधती जीव को सच मानो ॥

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥ ८ ॥

देहाभिमानियों को करता मोहित जो, तम कहलाता है ।
अज्ञानज वह निद्रा प्रमाद, आलस से जीव बाँधता है ॥

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥

सत सुख में सदा लगाता है, रज कर्मों में प्रवृत्त करता ।
तम ढाँक ज्ञान को हे अर्जुन ! मन में प्रमाद को है भरता ॥

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत ।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥

रज-तम को सदा दबा करके हे अर्जुन ! सतगुण है बढ़ता ।
रज-सत को दबा तमोगुण त्यों, तम-सत को दबा रजः बढ़ता ॥

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते ।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥ ११ ॥

जब हृदय-इन्द्रियों में तन में, चेतनता बोध-शक्ति होती ।
आभास मिले ऐसा जिस क्षण, सत की-अभिवृद्धि तभी होती ॥

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥ १२ ॥

बढ़ने पर रज, हे पार्थ ! सुनो, होती है लोभ-प्रवृत्ति-अशम ।
फिर स्वार्थ-बुद्धि से कर्मों का आरंभ तथा बढ़ जाता भ्रम ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १३ ॥

हे पार्थ ! तमोगुण बढ़ने पर, मानव निज जीवन खोते हैं ।
अज्ञान-प्रमाद-मोह-आलस, इससे ही पैदा होते हैं ॥

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् ।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥

सत की बढ़ती में जीवात्मा, जब कभी मृत्यु को पाता है ।
तब श्रेष्ठ कर्म करने वालों के, शुभ लोकों को जाता है ॥

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥ १५ ॥

रज बढ़ने पर हो मृत्यु, तभी होता वह कर्मासक्त मनुज ।
तम के बढ़ने पर मरा हुआ, निश्चित होता पशु-कीट-दनुज ॥

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥ १६ ॥

सत-कर्मों का सात्विक निर्मल, फल होता सुख-वैराग्य-ज्ञान ।
राजस का फल है दुःख निश्चित, तामस का फल अज्ञान जान ॥

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥ १७ ॥

सत से होता है ज्ञान, और रज से होता है लोभ महा ।
तम से त्यों ही—अज्ञान तथा आलस-प्रमाद अरु मोह कहा ॥

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥ १८ ॥

सतगुण में सुस्थित हुये पुरुष, ऊँचे स्वर्गादि लोक पाते ।
राजस, नर-लोक, तथा तामस—हैं निम्न योनियों में जाते ॥

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


है नित्य-अकर्ता-गुणातीत यह आत्मा, जो जन हृदय धरे।
वह पाता है मेरा स्वरूप, जो है माया से सदा परे॥

गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते॥ २०॥

ऐसा नर निश्चित तीनों गुण, ही सहज पार है कर जाता।
वह जीवन-जरा-मरण-दुख से हो मुक्त, परम-पद है पाता॥

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते॥ २१॥

गुणातीत के क्या लक्षण? आचरण कहो कैसा होता?
पूछा अर्जुन ने हे भगवन! कैसे वह गुणातीत होता??

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति॥ २२॥

बोले श्री कृष्ण न जो माने अज्ञान ज्ञान को बुरा कभी।
उनकी निवृत्ति होने पर भी, करता न लालसा अरे-कभी॥

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते॥ २३॥

जो उदासीनवत् हो सुस्थित, होता न गुणों से है विचलित।
'वर्तते गुणों में गुण केवल' जो जान, ईश में है सुस्थित॥

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः॥ २४॥

जो सुख-दुख को समान जाने, मिट्टी-पत्थर-सुवर्ण को भी।
निन्दा-स्तुति में जो है समान, है धीर, प्रियाप्रिय में सम भी॥

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते॥ २५॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मानापमान में जो सम है, अरि-मित्र जिसे सम हों प्रतीत।
वह सब आरंभों का त्यागी, अर्जुन ! कहलाता गुणातीत ॥

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥

जो मनुज अनन्य भक्ति द्वारा, है मुझे निरन्तर ही भजता।
होता वह पाने योग्य मुझे, जब—तीनों गुण सम्यक तजता ॥

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ॥ २७ ॥

मैं ही अविनाशी परम ब्रह्म, मैं ही अमृत हूँ धर्माश्रय।
हे अर्जुन ! मैं ही हूँ निश्चय, उस ऐकान्तिक सुख का आश्रय ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का गुणत्रय विभाग योग' नामक
चौदहवाँ अध्याय समाप्त।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# पञ्चदश अध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥

है मूल ऊर्ध्व शाखा नीचे, हैं वेद पर्ण जिसके सुन्दर ।
अव्यय-अश्वत्थ जानते जो, वेदज्ञ वही कहलाते नर ॥

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥

उस विश्व-वृक्ष की गुण-जल से हैं विषय-कोपलें अति सुन्दर ।
शाखायें ऊँचे-नीचे भी, हैं फैल रहीं सर्वत्र सुघर ॥
कर्मानुकूल बन्धन वाली, ममता-वासना-जड़ें भारी ।
नीचे-ऊँचे सब लोकों में, यह फैल रही हैं अति प्यारी ॥

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥

इस विश्व-वृक्ष का रूप यहाँ, है पाया जाता नहीं तथा ।
है इसका तो न आदि, अर्जुन ! है कभी न इसका अन्त यथा ॥
सुस्थित यह नहीं भली विधि से, सुविरूढ़ मूला वाला तरुवर ।
तू काट इसे वैराग्य-शस्त्र द्वारा सत्वर ही हे धनुधर ॥

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥

उस परम ब्रह्म परमेश्वर को, खोजना चाहिये सब प्रकार ।
जिसको कि प्राप्त कर कभी न नर, कहलाता कोई निराधार ॥
जिस आदि-पुरुष से जग-तरु का, धीरे-धीरे विस्तार हुआ ।
जो निश्चयपूर्वक भजता है, उसकी ही केवल शरण हुआ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥

जो मान मोह से रहित, तथा-परमात्मा में सुस्थित हरदम ।
कामना रहित, आसक्ति-हीन, सुख और दुःख में है जो सम ॥
द्वन्द्वों से मुक्त हुये ज्ञानी, जब आत्म-लीन हो जाते हैं ।
तो अविनाशी-अव्यय-पद को, वे शीघ्र प्राप्त हो जाते हैं ॥

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥

जिसको पावक-शशि सूर्य कभी, हैं नहीं प्रकाशित कर पाते ।
वह मेरा परम-धाम, जिसको पा—नर न लौटकर हैं आते ॥

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥

मेरा ही अंश सनातन है, यह जीव-देह में सदा, पार्थ ।
माया सुस्थित, मन सहित वही—इन्द्रियाँ खींचता है यथार्थ ॥

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥ ८ ॥

ज्यों वायु गंध को ले जाता, वैसे ही यह जीवात्मा भी ।
मन सहित इन्द्रियों को लेकर, पाता अन्यान्य शरीर सही ॥

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते । ९ ॥

यह घ्राण-चक्षु औ' श्रवण त्वचा, रसना से मन को धरता है ।
फिर जीवात्मा मन आश्रित हो, विषयों का सेवन करता है ॥

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥

त्यागते हुये तन रखते भी, भोगते गुणों से युक्त सभी ।
जानते तत्व से हैं ज्ञानी, उसको अज्ञानी नहीं कभी ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ॥ ११ ॥

योगीजन करके यत्न सतत, इस आत्मा का दर्शन करते ।
पर करके यत्न विमूढ़ अधम, इसको न देख पाते मरते ॥

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ १२ ॥

जो तेज सूर्य में सुस्थित हो, सारा जग आलोकित करता ।
वह सब मेरा ही तेज पार्थ ! जो शशि-पावक में है रहता ॥

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥ १३ ॥

मैं ही महि में करके प्रवेश, सब भूतों को धारण करता ।
फिर होकर रसमय-सोम सभी, औषधियों का वर्धन करता ॥

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ १४ ॥

सबके तन में सुस्थित होकर, मैं वैश्वानर कहलाता हूँ ।
मैं ही हो प्राण-अपान युक्त, वे चारों अन्न पचाता हूँ ॥

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥

मैं ही अन्तर्यामी बनकर, सबके उर में सुस्थित रहता ।
मेरे से स्मृति ज्ञान अपोहन, यहाँ सदा होता रहता ॥
जानने योग्य हूँ कुरुनन्दन ! सब वेदों के द्वारा मैं ही ।
वेदान्तों का मैं ही कर्ता, हूँ अरे वेदविद् तो मैं ही ॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥ १६ ॥

इस जग में क्षर-अक्षर ही तो, हैं दो प्रकार के पुरुष अहा ।
सब भूतों के तन तो हैं क्षर, पर अक्षर है कूटस्थ महा ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥ १७ ॥

उन दोनों पुरुषों से अर्जुन ! निश्चय ही उत्तम पुरुष परे ।
त्रय लोकों का धारक-पोषक, अव्यय परमात्मा वही, अरे ॥

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥

मैं क्षरातीत हूँ अक्षर से, भी उत्तम कहलाता अर्जुन ।
बस, इसीलिए तो लोक-वेद में, पुरुषोत्तम कहलाता सुन ॥

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥

पुरुषोत्तम सदा जानता है, जो ज्ञानी मुझको इस प्रकार ।
मुझको ही भजता है हरदम, सर्वज्ञ-पुरुष वह सब प्रकार ॥

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

है कहा बहुत ही गोपनीय, मैंने यह ज्ञान श्रेष्ठ अर्जुन ।
जिसको कि जानकर नर, ज्ञानी एवं कृतार्थ हो जाता-सुन ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'पुरुषोत्तम योग' नामक
पन्द्रहवाँ अध्याय समाप्त ।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# षोडश अध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥

स्वाध्याय-यज्ञ-तप-दान और दम-आर्जव-उर की शुद्धि, अभय ।
ज्ञानार्थ ध्यान में दृढ़ सुस्थिति, बोले अर्जुन से कृष्ण सदय ॥

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥

अक्रोध-अहिंसा-सत्य-त्याग, पर-निन्दा-शान्ति-दया-मृदुता ।
लज्जा-आसक्ति-रहित होना, एवं यह व्यर्थ अचंचलता ॥

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥

धृति-क्षमा-तेज-अद्रोह-शौच, एवं सम्मान-विहीन सदा ।
हैं प्राप्त जिन्हें दैवी-सम्पद्, उनके यह गुण हैं पार्थ, सदा ॥

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ ४ ॥

हे पार्थ ! दंभ-अभिमान-दर्प, पारुष्य क्रोध-अज्ञान मान ।
आसुरी सम्पदा प्राप्त जिसे, उस नर के लक्षण यही जान ॥

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥ ५ ॥

दैवी सम्पदा विमुक्ति-हेतु, आसुरी कही है—बन्धनार्थ ।
तुझको दैवी सम्पदा प्राप्त, इस लिए न कर तू शोक पार्थ ॥

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हैं दैव तथा आसुर दो ही, हे अर्जुन ! भूतों के स्वभाव ।
सुन चुका दैव, विस्तार-सहित, अब सुन तू असुरों का स्वभाव ॥

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥ ७ ॥

वे नहीं जानते हैं प्रवृत्ति एवं निवृत्ति पापाचारी ।
है शौच न उनमें सदाचार, वे हैं निश्चय मिथ्याचारी ॥

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥

वे कहते यह जग स्वयंभूत है बिना ईश के निराधार ।
नर नारी मिलन हेतु इसका, यह भोगों का भंडार सार

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ९ ॥

यह मिथ्या ज्ञान ग्रहण कर वे, करते रहते अपकार सदा ।
वे अल्प बुद्धि, नष्टात्म ! क्रूर-कर्मी बनते जग-भार सदा ॥

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥

वे दंभ-मान-मद युक्त हुये, हैं असत कामनायें करते ।
मिथ्या-सिद्धान्तों को ले वे, नित भ्रष्ट-कर्म में रत रहते ॥

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥

वे मरने तक रहने वाली, चिन्ताओं का आश्रय लेते ।
कामोपभोग में तत्पर रह, उसको आनन्द मान लेते ॥

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥ १२ ॥

शत-आश-पाश में फँसे हुए, वे काम क्रोध को अपनाते ।
इन्द्रिय भोगों की पूर्ति-हेतु, अन्याय-पूर्वक धन लाते ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ १३ ॥

पा लिया आज तो यह मैंने, कल और मनोरथ पाऊँगा ।
इतना धन मेरे पास अभी, फिर और धनी हो जाऊँगा ॥

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥ १४ ॥

यह वैरी मैंने मार लिया, कल औरों को भी मारूँगा ।
मैं भोगी-सिद्ध-सुखी- ईश्वर, मैं नहीं किसी से हारूँगा ॥

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥

मैं हूँ धनाढ्य, है कौन यहाँ ? दूसरा अरे, मेरे समान ।
दे दान, करूँगा, हर्ष प्राप्त, हैं वे मोहित ऐसे अजान ॥

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥

हैं मोह-जाल में फँसे हुये, वे भ्रमित-चित्त वाले दुर्जन ।
आसक्त विषय-भोगों में हो, वे पाते अशुचि नरक, अर्जुन !!

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥

वे आत्म- प्रशंसक पाखंडी, धन मान और मद से युत हो ।
करते हैं यजन अविधिपूर्वक, वे यज्ञ दंभ से प्रेरित हो ॥

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥

वे अहंकार-बल-दर्प-काम-क्रोधादि-परायण रहते हैं ।
सबके तन में सुस्थित मुझको, पर-निन्दक नहीं समझते हैं ॥

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान् ।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो क्रूर-नराधम-अति पापी, हैं मुझसे द्वेष सदा करते।
वे असुर-योनियों में रह-रह, हर बार भयंकर दुख सहते॥

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्॥ २०॥

आसुरी-योनि को प्राप्त हुये, वे मूढ़ न मुझे कभी पाते।
वे नीच-अधम गति को पाकर, सचमुच नरकों में हैं जाते॥

त्रिविधं नरकस्येदं द्वार नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।

हैं काम क्रोध अरु लोभ, पार्थ! यह तीन नरक के द्वार सदा।
मानव के वैरी हैं निश्चय यह, इससे तीनों त्याज्य सदा॥

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्॥ २२॥

इन तीन नरक के द्वारों से, जो पुरुष मुक्त हो जाता है।
चलकर कल्याण-पंथ पर तो वह धीर परम गति पाता है॥

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥ २३॥

जो पुरुष शास्त्र की विधि को तज,कर इच्छा से कर्म किया करता।
वह कभी सिद्धि सुख प्राप्त न कर,है नहीं परम गति पा सकता॥

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥ २४॥

इस कार्याकार्य व्यवस्था में, केवल कर शास्त्रों को प्रमान।
कर सभी शास्त्र विधि-युक्त कर्म पहले उन सबका मर्म जान॥

श्रीमद्भगवद्गीता का 'देवासुर संपद् विभाग योग' नामक
सोलहवाँ अध्याय समाप्त।

———

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥ १ ॥

हे कृष्ण ! शास्त्र-विधि को तज जो, श्रद्धा से देव-यजन करते ।
रज-तम-सात्विकी तीन में से, उनकी निष्ठा को क्या कहते ?

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ २ ॥

केवल स्वभावजा वह श्रद्धा, निश्चय ही त्रिविधा होती है ।
बोले श्री कृष्ण-सुनो अर्जुन, इसको पा, जो गति होती है ॥

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥ ३ ॥

है सभी प्राणियों की श्रद्धा, उनके भावानुरूप होती ।
यह पुरुष सदा से श्रद्धामय, जैसी श्रद्धा वह गति होती ॥

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः ।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥ ४ ॥

सात्विक जन देवों को, राजस यक्षों को पूजा करते हैं ।
पर, तामस जन तो सदा, भूत-प्रेतों को पूजा करते हैं ॥

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः ।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥

जो मनुज शास्त्र-विधि को तजकर, तप घोर स्वतः तपते रहते ।
वे अहंकार-युत, हैं दंभी, कामादि-राग-बल-युत फिरते ॥

कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ।
मां चैवान्तः शरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो सभी प्राणियों को, एवं-मुझको भी कृश करते रहते।
आसुर-स्वभाव वाले वे सब, हैं मूढ़-व्यर्थ जीवन धरते ॥

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥ ७ ॥

ज्यों श्रद्धा त्रिविधा होती है, अर्जुन त्यों ही आहार त्रिविध।
वैसे ही ज्ञान-यज्ञ-तप भी, होते हैं जग में पार्थ त्रिविध.॥

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥ ८ ॥

बल-बुद्धि प्रीति-सुख आयु और आरोग्य-वृद्धि हैं जो करते ।
रस युक्त, स्निग्ध भोजन-पदार्थ, सात्विक पुरुषों को प्रिय लगते ॥

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥

कड़वे-खट्टे-नमकीन-गरम जो तीक्ष्ण तथा रूखे रहते ।
यों दुखद और शोकद पदार्थ, राजस लोगों को प्रिय लगते ॥

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ १० ॥

रस-रहित, अधपका जूठा भी, बासी दुर्गन्ध युक्त भोजन ।
अपवित्र आहार सदा रुचिकर, तामस लोगों को, हे अर्जुन ॥

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥ ११ ॥

शास्त्रानुसार जो नियत यज्ञ, करना ही है कर्तव्य, पार्थ।
तज, फलासक्ति-करते जो जन, वह यज्ञ सात्विक है यथार्थ ॥

अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥ १२ ॥

फल की इच्छा रखकर के जो, केवल दंभार्थ यज्ञ करते ।
हे अर्जुन ! सब धीमान् उसे, हैं राजस यज्ञ कहा करते ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥ १३ ॥

जो शास्त्र-वेद-विधि-हीन सदा, है बिना दक्षिणा के, अर्जुन ।
वह मंत्र-हीन, श्रद्धा-विरहित, है यज्ञ-अरे, तामस-तू सुन ॥

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥ १४ ॥

द्विज-देव-प्राज्ञ गुरु का पूजन, शुभ ब्रह्मचर्य सारल्य सदा ।
पावनता और अहिंसा ही, शारीरिक तप है, पार्थ सदा ॥

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥ १५ ॥

जो अनुद्वेग कर, हितकारक, है प्रिय-भाषण निश्चय यथार्थ ।
स्वाध्याय, नाम-जप असंदिग्ध, है वाणी का तप, वीर पार्थ ॥

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥ १६ ॥

मन की प्रसन्नता, शान्त भाव, मौनात्म-विनिग्रह सदा पार्थ ।
उर की पवित्रता मिल यह सब, मानस तप है, तू सुन यथार्थ ॥

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः ।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥ १७ ॥

सब फलासक्ति तज युक्त पुरुष, अर्जुन ऐसा उर-धरते हैं ।
श्रद्धापूर्वक पूर्वोक्त त्रिविध, तप को वे सात्विक कहते हैं ॥

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥ १८ ॥

जो तप केवल पाखंड हेतु-आदर-पूजार्थ किया जाता ।
वह क्षणिक अनिश्चित फल वाला, राजस-तप सदा कहा जाता ॥

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो तप हठ-पूर्वक, पर-पीड़न, एवं अनिष्ट-हित करते हैं।
निश्चयपूर्वक हे पार्थ ! सुनो उसको तामस-तप कहते हैं॥

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ २० ॥

जो देश-काल-पात्रानुसार, है दान दिया जाता, अर्जुन।
कर्तव्य समझ जो अनुपकार-हित होता है, सात्विक तू सुन॥

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥ २१ ॥

जो दान क्लेश-पूर्वक अर्जुन ! देते हैं प्रत्युपकार-हेतु
सोद्देश दान ही वह राजस, होता केवल परिणाम—हेतु॥

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

जो दान बिना सम्मान किये, है दिया कुपात्रों को जाता।
निश्चय ही ऐसा दान पार्थ ! केवल तामस माना जाता॥

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥ २३ ॥

यह त्रिविध ब्रह्म का नाम ओम्, तत्-सत जो सदा हृदय धारे।
ब्राह्मण यज्ञादिक वेद, उसी से रचे गए पहिले सारे॥

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ २४ ॥

इसलिए ब्रह्मवादी विधियुत, तप-यज्ञ-दान की क्रिया सभी।
करते हैं, प्रथम ओम् कहकर, प्रारंभ पार्थ ! वे सदा सभी॥

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभि ॥ २५ ॥

यह सब उस प्रभु का है केवल, जो फल न चाहते हुये कभी।
वे दान-यज्ञ-तप-क्रिया आदि, करते मोक्षेच्छुक मनुज सभी॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥ २६ ॥

सद्भाव दिव्य भावों में है सत का सुप्रयोग किया जाता ।
उत्तम कर्मों में भी इसका अर्जुन उपयोग किया जाता ॥

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥

तप-दान-यज्ञ में जो सुस्थिति वह भी सत अर्जुन कहलाती ।
उस परमात्मा के लिए क्रिया जो की जाती—सत कहलाती ॥

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥ २८ ॥

श्रद्धा-विहीन हुत, दिया दान—तप एवं जो कुछ कर्म किया ।
वह सभी असत कहलाता है, हे पार्थ ! व्यर्थ वह यहाँ जिया ॥

श्रीमद्भागवत् गीता का 'श्रद्धात्रय विभाग योग'
नामक सत्रहवां अध्याय समाप्त

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# अष्टादश अध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् ।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥

अर्जुन बोले–हे महाबाहु ! मेरी बिनती यह सुन लीजे ।
संन्यास, त्याग का तत्व पृथक, कहने की कृष्ण कृपा कीजे ॥

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ २ ॥

है काम्य-कर्म का त्याग जिसे, संन्यास बताते हैं कुछ जन ।
सब कर्मों के फल को तजना, ही त्याग बताते हैं बुध-जन ॥

त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥ ३ ॥

हैं दोष युक्त सब कर्म यहाँ, इसलिए त्याज्य–कुछ कहते हैं ।
तप-दान-यज्ञ यह नहीं त्याज्य, कुछ ऐसा भी तो कहते हैं ॥

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

परित्याग विषय में अब मेरा, हे पुरुषश्रेष्ठ ! दृढ़ निश्चय, सुन ।
सात्विक-राजस एवं तामस–हैं त्याग त्रिविध जग में अर्जुन ॥

यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥ ५ ॥

हैं नहीं त्याज्य, करणीय सदा, तप-दान और यज्ञादि-कर्म ।
पावन करने वाले हैं यह, मतिमानों को तीनों सुकर्म ॥

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥ ६ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


यह श्रेष्ठ कर्म जितने भी हैं, वे करने योग्य सभी, निश्चित ।
आसक्ति और फल को तजकर, सब करो—यही है मेरा मत ॥

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ ७ ॥

तज देता नियत-कर्म अर्जुन, श्रेयस्कर कभी न कहलाता ।
तज देना उसे मोह द्वारा, यह तामस-त्याग कहा जाता ॥

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥ ८ ॥

सब कर्मों को दुख-रूप समझ, जो दैहिक-दुख-भय से तजता ।
करके भी राजस-त्याग, उसे—उसका फल कभी नहीं मिलता ॥

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ॥ ९ ॥

आसक्ति और फल तजकर जो, शास्त्रोक्त-कर्म विधिवत करता ।
वह ही है सात्विक-त्याग पार्थ, मन शुभ-भावों से है भरता ॥

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते ।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः ॥ १० ॥

अकुशल-कर्मों से नहीं द्वेष, आसक्त न जो शुभ कर्मों में ।
सतगुण से युक्त हुआ वह ही, त्यागी ज्ञानी, सब धर्मों में ॥

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥

तन-धारी जन पूरी विधि से, सब कर्मों को न त्याग पाता ।
कर्मों के फल का त्यागी जो वह ही त्यागी है कहलाता ॥

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित् ॥ १२ ॥

तज देह, सकामी भी पाते—शुभ-अशुभ और मिश्रित सब फल ।
पर, त्यागी कभी नहीं पाता, है किसी काल में यह त्रय-फल ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥

सब कर्मों की संसिद्धि-हेतु, यह केवल पाँच हेतु जानो ।
जो सांख्य-योग में कहे गये, उनको ही भली-भाँति मानो ॥

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥ १४ ॥

'कर्ता' 'आधार' तथा न्यारे-न्यारे हैं 'करण' यहाँ अर्जुन ।
है पृथक्-पृथक् 'चेष्टा' एवं पाँचवा हेतु है 'दैव' गहन ॥

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥ १५ ॥

तन-मन-वाणी से जन जो भी हैं जग में कार्य किया करते ।
हों उचित या कि अनुचित, उनके यह ही पाँचों कारण रहते ॥

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥ १६ ॥

ऐसा होने पर भी विमूढ़, अपने को जो कर्ता माने ।
है मलिन-बुद्धि अति अज्ञानी, वह शुद्ध रूप कैसे जाने ॥

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥ १७ ॥

जिसमें कर्ता का भाव नहीं, है लिप्त न जिसकी बुद्धि यहाँ ।
वह मार सभी लोकों को भी, मारता न बँधता कभी यहाँ ॥

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥

ज्ञाता अरु ज्ञान ज्ञेय अर्जुन, हैं यही कर्म के प्रेरक त्रय ।
ऐसे ही कर्ता-कर्म-क्रिया, हैं यही कर्म के संग्रह त्रय ॥

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥ १९ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हैं सांख्य-शास्त्र में कहे गये, त्रय ज्ञान-कर्म-कर्ता अर्जुन ।
होकर के शान्त और सुस्थित, उनको भी भली-भाँति तू सुन ॥

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥ २० ॥

जो पृथक्-पृथक् सब भूतों में, अविभक्त-भाव से एक मान ।
केवल मुझ अव्यय को लखता, उसको तू सात्विक ज्ञान जान ॥

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् ।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥ २१ ॥

सब भूतों में हो भिन्न-भिन्न, भावों का जिससे भान, पार्थ ।
उसको तू राजस ज्ञान जान, मैं कहता हूँ तुझसे यथार्थ ॥

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

जो एक कार्य में ही पूरी, विधि से आसक्त हुआ रहता ।
वह तामस ज्ञान तुच्छ है अति, जो नित तत्वार्थ-हीन रहता ॥

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्मयत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥

फल की आशा को तज करके, करता जो नियमित यहाँ कर्म ।
वह राग-द्वेष से संग-रहित, कहलाता सात्विक पुण्य कर्म ॥

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः ।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥

जो कर्म अहंकारी द्वारा, फल की आशा से होता है ।
है राजस कर्म वही जिसमें, नर अहं न अपना खोता है ॥

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥

परिणाम-हानि-हिंसा न देख, जो कर्मारंभ किया जाता ।
अज्ञान-पूर्ण, सामर्थ्य-हीन—वह तामस-कर्म कहा जाता ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥ २६ ॥

जो निर्विकार आसक्ति-रहित, उत्साह धैर्य से हृदय भरे ।
है सात्विक-कर्ता वह अर्जुन ! जो अनहंवादी, धीर धरे ॥

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥ २७ ॥

रागी फल-आशा का इच्छुक, जो हर्ष-शोक से युक्त, पार्थ ।
वह लोभी हिंसात्मक-मलीन, है राजस-कर्ता सुन यथार्थ ॥

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठोनैष्कृतिकोऽलसः ।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥ २८ ॥

शिक्षा से रहित घमंडी शठ, जो आलस से मन बहलाता ।
निष्क्रिय शोकाकुल दीर्घसूत्र, तामस-कर्ता वह कहलाता ॥

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु ।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥ २९ ॥

इन तीन गुणों के ही कारण, है त्रिविध भेद निश्चय, अर्जुन ।
सत बुद्धि और धृति का वर्णन, विस्तार-सहित तू मुझसे सुन ॥

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ ३० ॥

हे पार्थ! प्रवृत्ति-निवृत्ति-मोक्ष, जाने भय, बन्धन और अभय ।
जो जाने कार्याकार्य सदा, वह ही तो सात्विक बुद्धि, सदय ॥

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ ३१ ॥

जो कार्याकार्य अधर्म-धर्म, को नहीं जानती है यथार्थ ।
निश्चय पूर्वक इसको मानो, है वही बुद्धि राजसी, पार्थ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ ३२ ॥

जो है आवृत्त तमोगुण से, माने अधर्म को धर्म, पार्थ !
सब अर्थों को उलटा जाने, तामसी-बुद्धि वह ही यथार्थ ॥

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी । ३३ ॥

अव्यभिचार्य धारणा से, प्राणेन्द्रिय मन की क्रिया सभी ।
धारे जो ध्यान योग द्वारा, कहलाती 'धृति' सात्विकी तभी ॥

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन ।
प्रसङ्गेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ ३४ ॥

फल-इच्छुक जन जिस धृति द्वारा, धारण करता कामार्थ-धर्म !
वह धृति राजसी कहाती है, समझो तुम इसका पार्थ ! मर्म !!

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥

निद्राभय-चिन्ता-मद-दुखको, जिस धृति द्वारा धारण करता ।
तामसी वही धृति हे अर्जुन ! दुर्बुद्धि सदा वह दुख सहता॥

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥ ३६ ॥

अब सुनो त्रिविध-सुख को अर्जुन ! मैं कहता हूँ तेरे हितार्थ ।
करके अभ्यास ध्यान द्वारा, जिससे जानेगा तू यथार्थ ॥

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥

लगता वह विष के सदृश प्रथम, परिणाम सुधा सम होता है ।
जो ईश-कृपा से मिलता है, वह ही सात्विक सुख होता है ॥

विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥ ३८ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


जो होता सुख विषयेन्द्रिय से, पहले अमृत-सा लगता वह।
परिणाम गरल-सम होता फिर, कहलाता है राजस सुख वह॥

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्॥ ३९॥

जो प्रथम-अन्त में भी न सुखद, निद्रा-आलस-प्रमाद वाला।
तामस सुख कहलाता वह ही, आत्मा मोहित करने वाला॥

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः॥ ४०॥

दिवि में, पृथ्वी में, देवों में, प्राणी ऐसा है नहीं कहीं।
जो हो इन त्रिगुणों से विमुक्त, मेरा यह मिथ्या-वचन नहीं॥

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः॥ ४१॥

द्विज-क्षत्रिय-वैश्य अन्त्यजों के है, सारे कर्म विभक्त सुनो।
वे सभी स्वभावज है अर्जुन! उनको गुण के अनुकूल गुनो॥

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥ ४२॥

शम-दम-आर्जव-तप-क्षमा भाव, आस्तिक-मति औ विज्ञान-ज्ञान।
ब्राह्मण के कर्म स्वभावज हैं, इनसे ही बनते वे महान॥

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥ ४३॥

धृति-तेज शौर्य चातुर्य और, हटना न कभी रण से,अर्जुन।
स्वामीपन दान आदि यह ही, स्वाभाविक क्षत्रिय कर्म गहन॥

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्॥ ४४॥

कृषि-गौरक्षा-वाणिज्य आदि, हैं वैश्यों के यह सहज-कर्म।
सब वर्णों की सेवा करना, - निःस्वार्थ शूद्र का सहज-धर्म॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ ४५ ॥

निज-निज कर्मों में निरत मनुज, पाता है परमसिद्ध, मुझको ।
जैसे निज-कर्म-निरत-पाता, है सिद्धि श्रवण कर तू उसको ॥

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥ ४६ ॥

जिससे सब प्राणी प्रगट हुये, जिससे यह व्याप्त जगत सारा ।
पाते नर परम-सिद्धि केवल, पूजा कर निज-कर्मों द्वारा ॥

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम् ॥ ४७ ॥

निर्गुण भी अपना धर्म श्रेष्ठ, पर-धर्म नहीं हो सकता वर ।
होगा न पाप तुझको, अर्जुन ! इससे स्व-धर्म का पालन कर ॥

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥ ४८ ॥

होने पर दोष-युक्त भी तो, हैं नहीं त्याज्य, निज सहज-कर्म ।
हैं क्योंकि दोष से आच्छादित, धूम्राग्नि भाँति सब यहाँ कर्म ॥

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥

निरासक्त बुद्धिवाला, जो निस्पृह और जितात्मा नर ।
पाता नैष्कर्म्य-सिद्धि को वह, द्रुत साँख्य योग से निश्चयकर ॥

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥ ५० ॥

हे कुन्ती पुत्र ! सिद्ध योगी, करता है प्राप्त ब्रह्म कैसे !
सुन तत्व-ज्ञान की निष्ठा भी, मिल जाती है उसको जैसे !!

बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ ५१ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


हो शुद्ध-बुद्धि से युक्त तथा, धृति द्वारा मन को वश में कर।
हो राग-द्वेष से हीन, तथा शब्दायदिक विषयों को तजकर ॥

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्य वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५२ ॥

एकान्त देश-सेवी जो नर, तन-मन-वाणी वश में करके।
हो ध्यानयोग से युक्त नित्य, वैराग्य सुदृढ़ धारण करके ॥

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ ५३ ॥

बल-क्रोध-काम-संग्रह-घमंड फिर अहंकार जो तज देता।
वह ही प्रशान्त निश्चय करके, तब पारब्रह्म को पा लेता ॥

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ५४ ॥

है जो प्रसन्न चित ब्रह्मलीन, करता न शोक आकांक्षा ही
सब भूतों में सम भाव हुआ, पाता है मेरी भक्ति वही ॥

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥

उस परा भक्ति के द्वारा वह तत्वतः जान लेता मुझको।
यों होता लीन मुझी में जो, मैं रहता नहीं अलभ उसको ॥

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥ ५६ ॥

निष्काम-कर्म-योगी मत्पर, हो सभी कर्म करता जाता।
वह मेरी कृपा-मात्र से फिर, शाश्वत-पद-अव्यय पा जाता ॥

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ ५७ ॥

अर्जुन ! सब कर्मों को मुझ में, मन से अर्पण कर मत्पर हो।
आश्रय ले बुद्धियोग का तू मेरे मनवाला तत्पर हो ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥ ५८ ॥

मेरे मन वाला होकर यों, पा-कृपा-कोर–तर जायेगा ।
यदि अहंकार-वश सुना न कुछ, तो स्वयं नष्ट हो जायेगा ॥

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति ॥ ५९ ॥

यदि अहंकार का आश्रय ले–तू नहीं करेगा युद्ध, पार्थ ।
क्षत्रिय का सहज-स्वभाव तुझे योजित कर देगा सुन, यथार्थ ॥

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥ ६० ॥

होकर के मोहाधीन, पार्थ ! करना न चाहता तू जिसको ।
परवश उस सहज-प्रकृति द्वारा, वह ही करना होगा तुझको ॥

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥

सब भूतों के उर में अर्जुन ! सर्वज्ञ-ईश सुस्थित रहता ।
कर्मानुकूल जो जीवों को–निज माया से प्रेरित करता ॥

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥ ६२ ॥

इसलिये सर्वभावेन पार्थ ! शरणागत हो सब कुछ तजकर ।
उस प्रभु की कृपा मात्र से ही, पायेगा परम-शान्ति-पद-वर ॥

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ६३ ॥

अति गोपनीय से गोपनीय, यह ज्ञान कहा मैंने हितकर ।
हो अब जैसी तेरी इच्छा, कर वही-तुझे जो हो रुचिकर ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥

जो धर्मयुक्त हम दोनों का, सम्वाद पढ़ेगा प्रेम-सहित ।
मैं ज्ञान-यज्ञ द्वारा उससे, पूजित होऊँगा, है निश्चित ॥

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥

जो दोष दृष्टि से रहित, तथा श्रद्धायुत हो यह श्रवण करे ।
पापों से युक्त हुआ निश्चय, वह शुभ लोकों को प्राप्त करे ॥

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥ ७२ ॥

एकाग्र-चित्त से सुन करके, पावन गीता की महिमा यह ।
वह मोह-जनित-अज्ञान, पार्थ ! क्या हुआ न नष्ट अरे सच कह ॥

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥

हो गया नष्ट सब मोह, कृष्ण ! पा करके कृपा त्वदीय यहाँ !
सुधि प्राप्त हुई, सन्देह गया, मैं पालूंगा तव-वचन, महा !!

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

संजय ने कहा कि हे राजन ! अद्भुत-रोमांचक सुखद पुण्य !
कृष्णार्जुन का सम्वाद सुना, अति दुर्लभ मैं हो गया धन्य !!

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

पा, व्यास कृपा से दिव्य-दृष्टि, है सुना योग मैंने दुर्लभ !
साक्षात् कृष्ण योगेश्वर ने, अर्जुन के प्रति जो कहा-अलभ !!

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org


राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥

सुन कृष्णार्जुन-सम्वाद सत्य, अद्भुत पावन-शिव-अति सुन्दर ।
सुस्मृतिकर पुनः पुनः होता, अति ही हर्षित मैं, हे नर-वर ॥

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥ ७७ ॥

सुस्मृत कर अद्भुत विश्वरूप, आश्चर्य-चकित हो जाता हूँ ।
मैं बारबार हर्षित होकर, अपनी सुधि बुधि खो जाता हूँ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

राजन् ! योगेश्वर कृष्ण जहाँ, हैं और धनुर्धर पार्थ जहाँ ।
ऐसा मेरा मत है निश्चित-श्री-विजय-भूति-ध्रुव-नीति वहाँ ॥

श्रीमद्भगवद्गीता का मोक्ष-संन्यास योग' नामक
अठारहवाँ अध्याय समाप्त ।

॥ श्रीमदभगवद्गीता समाप्त ॥

मुद्रक—पं० पुरुषोत्तमदास कटारे, हरीहर प्रेस, कंसखार मथुरा ।

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

# ❀ अथ श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्यम् ❀

गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ।
विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः ॥ १ ॥
गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च ।
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च ॥ २ ॥
मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने ।
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम् ॥ ३ ॥
गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ॥ ४ ॥
भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिःसृतम् ।
गीता गङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ५ ॥
सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥ ६ ॥
एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव ।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ॥ ७ ॥

जो मनुष्य इस परम पुण्यदायक गीता-शास्त्र का श्रद्धापूर्वक नियम से पाठ करेगा, वह समस्त सांसारिक भय और शोकों से छुटकारा पाकर विष्णुलोक में उच्च स्थिति को प्राप्त करेगा ॥ १ ॥ जो व्यक्ति नियमित रूप से गीता का अध्ययन और प्राणायाम का अभ्यास करता रहता है वह इस जन्म के तथा पूर्व जन्मों के समस्त कर्मों से छुटकारा पा जाता है और उसे किसी प्रकार का पाप नहीं लग सकता ॥ २ ॥ जिस प्रकार मैल को दूर करने के लिये प्रतिदिन जल से स्नान करना आवश्यक होता है उसी प्रकार गीतारूपी पुण्य सलिल में स्नान करने से संसार के समस्त मल नष्ट हो जाते हैं ॥ ३ ॥ गीता का अध्ययन करते रहना सर्वश्रेष्ठ है, तत्पश्चात् अन्य शास्त्रों की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि यह ऐसा महान् शास्त्र है जो स्वयं भगवान् के मुख कमल से निकला है ॥ ४ ॥ यह गीता महाभारत रूपी समुद्र का सारतत्व अर्थात् अमृत है और स्वयं भगवान् के मुख से प्रकट हुई है, इसके उपदेश रूपी गंगाजल को पीने से पुनः संसार-चक्र में फँसना नहीं पड़ता, अर्थात् गीता पाठ करने वाला निश्चय रूप से भगवान् की सायुज्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है ॥ ५ ॥ समस्त उपनिषद् गाय के समान हैं, गोपाल नन्दन श्रीकृष्ण उनको दुहने वाले हैं अर्जुन बछड़े की तरह हैं, और गीता का अमृत रूपी ज्ञान दूध के समान है, जिसको श्रद्धावान् ज्ञानी ग्रहण करते हैं ॥ ६ ॥ देवकी पुत्र श्रीकृष्ण की कही-हुई गीता ही एकमात्र शास्त्र है; देवकीनन्दन कृष्ण ही एकमात्र पूजनीय देव हैं, उनका नाम ही एकमात्र तारने वाला मंत्र है, और उनकी सेवा पूजा ही एकमात्र कर्तव्य परम कर्म है ॥ ७ ॥

# Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
# Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

6478
पुस्तकालय
युग निर्माण योजना
क्रम 6478
परिग्रहण सं.
वर्गीक

# युग-निर्माण-योजना

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

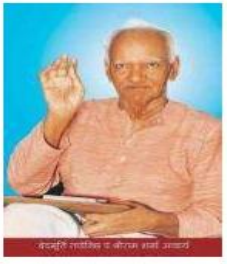

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar**
**Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**
**www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org**